ॐ

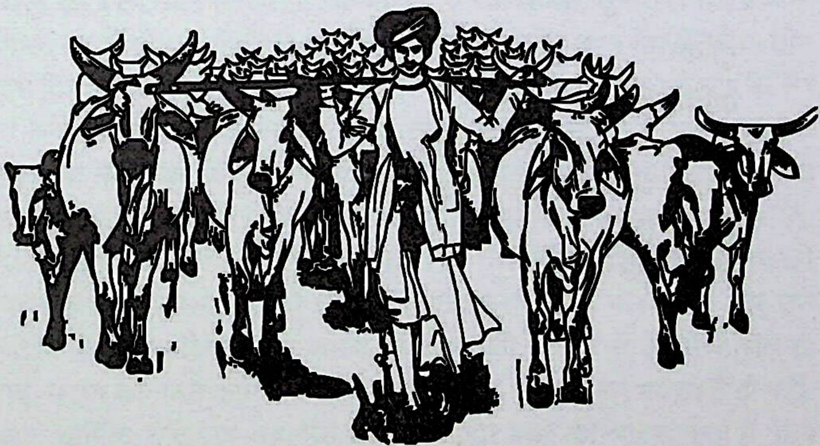
सृष्टि की संरक्षक भारतीय गाय



2-5

||ॐ||

सृष्टि की संरक्षक भारतीय गाय



-: संकलन कर्त्ता :-

शंकर लाल

अ.भा. गो सेवा प्रमुख

कर्णावती (अहमदाबाद) गुजरात

09414337444, 09429893360

E-mail : shankarlalgauseva@gmail.com

प्रकाशक :-
गो-सेवा विभाग (रा.स्व.संघ)
जयपुर (राजस्थान)

मुद्रक :-
अमित प्रिन्टर्स
576 काशीनाथ जी की गली,
गोपाल जी का रास्ता, चौड़ा रास्ता
जयपुर (राज.)
मो. 9828157872

प्रथम संस्करण- गुरु पूर्णिमा 2012, सम्वत् 2069
एकादश संस्करण- प्रतिपदा 2016, सम्वत् 2073

सहयोग राशि
25/-

॥ॐ॥

विनम्र अभिमत

इस पुस्तक को तैयार करने का हेतु, समाज को भारतीय गाय के महत्व व आवश्यकता को समझाना है । देशी गाय भारतीय जीवन की रीढ़ है, बिना देशी गाय के भारत की अर्थ व्यवस्था, कृषि व्यवस्था, स्वास्थ्य, पर्यावरण, जीव सृष्टि जंगल, संस्कारों को बचाना असम्भव है । गो ग्राम यात्रा इस दिशा में प्रभावी कदम था । उसके बाद समाज में जागृति आई है । हमारी गाय के महत्त्व के विभिन्न पक्षों पर इस पुस्तक में संक्षिप्त जानकारी है, इससे लोगों में गोमाता के विषयों पर काम करने की प्रेरणा प्राप्त हो और उसके माध्यम से स्वावलम्बी, सुखी, स्वस्थ, सम्पन्न भारत का निर्माण करने की दिशा में हम अग्रसर हो सकें। आज देश में अनेक लोग इस दिशा में सक्रिय हुए हैं, अनेक लोग इससे प्रेरणा ले रहे हैं । स्वदेशी गाय के क्षेत्र में अनेक सम्भावनायें है, देश के लाखों लोगों को रोजगार देने में वह सक्षम है । भारत के नेतृत्व को विदेशों की नकल छोड़कर अपने भारतीय संसाधनों से गाय व ग्रामाधारित विकास की दिशा में गतिशील होना चाहिए । यह मार्ग सस्ता, सरल, परिचित, प्रभावी, शीघ्र सफलता देने वाला है, जिसमें असफलता की संभावनायें बहुत कम है । हमने धर्म को (रिलीजन) उपासना पद्धति मान लिया और उसे जीवन से निकाल दिया है इस कारण पाप-पुण्य की अवधारणा हम से ओझल हो गई, मनुष्य को गलत काम करने में भय नहीं लगता, सरकार का भय तो है ही नहीं, अतः धार्मिक, नैतिकता आधारित जीवन की ओर बढ़ने की आवश्यकता है, गाय इस दिशा में ले जाने का एक अनुभूत माध्यम है, यह पुस्तक इस दिशा में देश की युवा पीढ़ी को प्रेरित कर सकने में सफल हो सके यही विनम्र प्रयास है ।

इस पुस्तक में संकलित सामग्री में गीताप्रेस के गो सेवा अंक, गायत्री परिवार के साहित्य, केलकर बन्धुओं द्वारा प्रकाशित सामग्री व अन्य ग्रन्थों का सहारा लिया गया है, मैं उन सब लेखकों, प्रकाशकों का आभारी हूँ जिन्होंने यह साहित्य उपलब्ध कराया । मैं कोई लेखक नहीं हूँ, संगठन का एक छोटा कार्यकर्ता हूँ, विभिन्न स्थानों पर विषय रखने पर उनका आग्रह हुआ कि इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाये । इसी में से यह प्रयास है ।



सूची

1

॥ॐ॥

सृष्टि की संरक्षक भारतीय गाय

ॐ सुरभ्यै नमः

श्री गणेशाय नमः

विश्वमंगल गो ग्राम यात्रा समाज जागरण का एक अनूठा प्रयास था, पूरे जन मानस को गो सेवा के विषय में जानकारी देने में यह आयोजन पूर्ण सफल रहा है, मुख्य यात्रा पूरे देश में 28500 किलो मीटर चली, देश के सब प्रान्तों में 768 बड़े कार्यक्रम हुए । उपयात्रायें 4015 चलीं जो देश के 4 लाख 11 हजार 737 ग्रामों तक गई, देश में इस समय 5 लाख 91613 ग्राम हैं, जिनमें से कई हजार गाँव बे-चिराग (जन शून्य) हैं । 31 जनवरी 2010 को देश के वयस्क जनों के 8 करोड़ 35 लाख हस्ताक्षर महामहिम राष्ट्रपति महोदया श्रीमति प्रतिभा पाटिल को समर्पित किए । **यात्रा की विशेषता-** यह गो माता का ही पुण्य है कि 4 महिने की यात्रा में साथ चलने वाले बन्धुओं (50) में से एक भी बीमार नहीं पड़ा, एक भी वाहन रास्ते में पंचर (वात बाधित) नहीं हुआ। देश के दुर्गम स्थलों से गुजरने के बाद भी कोई व्यवधान नहीं आया, सभी कार्यक्रम योजनानुसार सम्पन्न हुए ।

यात्रा के पश्चात्- देश के सब प्रान्तों में गो सेवा का वायुमंडल बना है । देश में 1000 से अधिक नई-गोशालायें प्रारम्भ हुई हैं । देशी व विदेशी नस्ल की गायों का अन्तर समाज के ध्यान में आया है, अनेक लोगों ने देशी गाय पालना शुरू किया है, देशी गाय के दूध, घी की मांग बढ़ी है । गोरक्षा में अनेक बन्धु सक्रिय हुए हैं, कत्लखाने जाने वाली हजारों गायों को कार्यकर्ताओं ने बचाया है ।

कर्नाटक की पूर्व सरकार ने गोरक्षा का कानून पारित किया था । मध्यप्रदेश, पंजाब, गुजरात, छतीसगढ़ की सरकारों ने अपने कानूनों में संशोधन करके उन्हें और अधिक कठोर, दण्डनीय बनाया है । हरियाणा, महाराष्ट्र सरकारों ने कठोर कानून बनाये हैं ।

देश में रासायनिक खाद व कीटनाशकों के प्रति किसानों का मोह भंग हुआ है । बड़ी संख्या में वे जैविक कृषि करने के लिये प्रेरित हो रहे हैं, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश इसके उदाहरण हैं, कुछ सरकारें भी इस विषय को प्रोत्साहन दे रही हैं ।

●●●

2

॥ॐ॥

भारत व विश्व की सुख शान्ति का आधार हमारी गो माता

"गावो विश्वस्य मातरः" हमारे ऋषि मुनियों ने गहन चिन्तन के बाद यह उद्घोष किया है। किन्तु आज योजना बद्ध तरीके से गोवंश को समाप्त किया जा रहा है, यह कृत्य अत्यन्त घृणित व सम्पूर्ण सृष्टि के लिये विनाशकारी है। अगर हम अभी सावधान नहीं हुए तो भविष्य में पश्चाताप् के अलावा कुछ नहीं बचेगा। "माँ" शब्द गाय से ही आया है, गाय का बछड़ा जन्मते ही "माँ" पुकारता है, वात्सल्य शब्द गाय से आया है, वत्स-यानि बछड़ा, गाय का अपने वत्स के प्रति प्रेम विलक्षण होता है, अपने बच्चे की रक्षा के लिए वह प्राण भी दे देती है पर उसे आँच नहीं आने देती। जल, जमीन, जंगल, जीव समूह, पर्यावरण, मनुष्य व संस्कारों को बचाये रखने का आधार गो माता है। अतः गो माता का संरक्षण संवर्धन अत्यन्त आवश्यक है।

(1) जल- आज जल जहरीला हो रहा है, कारण हमनें अपनी कृषि में अत्यधिक रासायनिक खाद, कीटनाशक डालकर उसे दूषित कर दिया है। जब वर्षा होती है तब यह रासायनिक खाद व कीट नाशक जो फसलों पर डाला था धुलकर नदियों तालाबों में जाता है, नदियों के जल का परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि उनमें 60% प्रदूषण है। वह जल हमें पीने को मिलता है उसका परिणाम ये अनेक बीमारियाँ है। अतः गोबर, गोमूत्र के द्वारा भूमि को शुद्ध कर जल को प्रदूषित होने से बाचाया जा सकता है। जहाँ कुए सूख गये हैं उनमें अनेक बार गोमूत्र डालने से वहाँ जल आ जाता है।

(2) भूमि- भूमि का भोजन गोमय, गोमूत्र है यह बात आज सभी प्रमुख लोगों को समझ में आ रही है। किसानों को आत्महत्या से बचाना है, भूमि को पथरीली, बंजर, विषयुक्त होने से बचाना है तो हमे गोबर, गोमूत्र का ही प्रयोग करना पड़ेगा। वह भी देशी गोवंश का, जर्सी, होलस्टन यह गाय नहीं है, उसका गोबर, गोमूत्र, दूध मनुष्य के लिए हानिकारक है। हम लाखों वर्षों से खेती करते आ रहे है उसका आधार गोमाता ही था। गोबर, गोमूत्र भूमि को उर्वरा व सुगन्धित बनाता है।

(3) जंगल- आज जंगल नष्ट हो रहे हैं। हमें 33% जंगल शुद्ध पर्यावरण के लिये चाहिये पर आज 7% बचे हैं उन्हें भी नष्ट किया जा रहा है। आज गोवंश को जंगल में चरने नहीं जाने दिया जाता तर्क यह देते हैं कि गाय जंगल नष्ट करती है, जबकी वास्तविकता यह है कि गाय खाती नहीं चरती है। उसके कारण अनेक प्रकार के बीज उसके पेट में जाते हैं, वे गोबर में उपचारित होकर जब जंगल में गिरते हैं उससे नये पौधे उगते हैं अतः गोमाता के कारण जंगल की वृद्धि होती है। अतः जंगल को बढ़ाने के लिये भी गोमाता का जंगल में घूमना जरूरी है।

पौधे के तीन भाग होते हैं नीचे का **तामसी** बीच का **राजसी** उपर का सात्विक गाय केवल ऊपर का चरती है, भैस सारे को खाती है इसलिए उसका स्वभाव **तामसी** है, गाय ऊपर का चरती है इसलिए उसका स्वभाव **सात्विक** है।

(4) जीव समूह- सम्पूर्ण जीव समूह का पालन भी गोमाता करती है, हमारे यहाँ जीवों की 84 लाख प्रजातियाँ मानी हैं, उनमें 20 लाख प्रजाति वनस्पति रूप में है। बाकी प्रजातियाँ 'चर' है जो चलकर भोजन प्राप्त कर लेते हैं, पर वनस्पति 'अचर' प्रजाति है, उनको भोजन अपने गोबर, गोमूत्र से गो माता देती है। सूर्य उनको प्रकाश देता है, वायुदेवता उनको श्वास लेने के लिए वायु देते हैं, इन्द्र देवता उनको वर्षा के द्वारा जल देते हैं धरती माता उन्हें गन्ध देती है। गोमाता उनको गोबर, गोमूत्र के द्वारा भोजन देती है। ये वनस्पति प्रजातियाँ फिर सब जीवों को भोजन देते हैं। अतः हमारे यहाँ कहा है- "जीव जीवस्य जीवनम्'। अतः सम्पूर्ण जीव सृष्टि की माता गो माता है।

(5) पर्यावरण- आज सारे विद्वान "ग्लोबल वार्मिंग" की समस्या से परेशान हैं, गर्मी बढ़ रही है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है यही स्थिति रही तो कुछ समय बाद समुद्र के किनारे के अनेक नगर जल में डूब जायेंगे।

हमारी संस्कृति 'यज्ञमयी' संस्कृति है जो सारे पर्यावरण की रक्षा करती है। **'पृथ्वी सूक्त'** में इसका विस्तृत विवरण है। गाय के **100 ग्राम** घी से यज्ञ करने पर दस **टन** ऑक्सीजन निर्माण होती है। हमारे द्वादश ज्योतिर्लिंग वर्षा के आकर्षण के केन्द्र है, यहाँ क्रमशः व विधि-विधान से यज्ञ किया जाय तो सारे भारत में पर्याप्त वर्षा हो सकती है। इनमें 8 ज्योतिर्लिंग अरब सागर के मानसून को प्रभावित करते हैं, 4 ज्योतिर्लिंग बंगाल की खाड़ी (गंगा सागर) की हवाओं को प्रभावित करते हैं।

गोमय से घर के आंगन, दीवारों, चूल्हे को लेप करने पर घर में रेड़ियों धर्मिता नहीं फैलती। नित्य **घर में गो धृत से दीपक जलाना**, **तुलसी माता** के आगे **दीपक जलाना** 'अग्नि होत्र यज्ञ' यह पर्यावरण शुद्धि के उत्कृष्ठ उदाहरण है, अतः पर्यावरण की रक्षा का आधार भी गो माता है।

(6) स्वास्थ्य- आज मानव शरीर बीमारी का घर हो गया है, जब इसके कारण की गहराई में जायेंगे तो ध्यान में आता है कि हरित क्रान्ति के नाम पर प्रयोग किया जाने वाला रासायनिक खाद, कीट नाशक, श्वेत क्रान्ति के लिए विदेशी नस्ल की गाय उसके द्वारा कृत्रिम गर्भाधान, दूध का मूल्यांकन वसा (Fat) के आधार पर करना, इसलिए गाय नहीं भैंस के दूध को प्रोत्साहन देना, आज भी अधिकांश बीमारियों का कारण है। पिछले 50 वर्षों में हमने पुलिस थानों में वृद्धि की है पर अपराध उससे अधिक तेजी से बढ़ रहे है। उसका कारण भी भैंस और जर्सी का दूध ही है।

(7) संस्कार - आज बच्चे माँ, बाप का कहना नहीं मानते इसका भी कारण भैंस, जर्सी का दूध है, क्योंकि भैंस, जर्सी को अपनी सन्तान से प्यार नहीं होता, जैसा खाओं अन्न वैसा बने मन। इन सब बीमारियों से देश को बचाना है, देश को सात्विक विचारों का बनाना है तो हमें भारतीय गोवंश का सहारा लेना चाहिए।

"जय गो माता"

●●●

3

॥ॐ॥

गो सेवा विभाग का उद्देश्य

संघ का गो सेवा विभाग कोई नया संगठन, संस्था निर्माण करना नहीं चाहता। देश में जो भी लोग गो सेवा के लिए काम कर रहे हैं वे हमारे हैं, वे किस जाति, पंथ, दल के हैं संघ उनमें भेद नहीं करता, वे गोसेवा के क्षेत्र में जो-जो काम कर रहे हैं उन कामों को समझना, भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों को एक मंच पर लाना उनके अच्छे कामों की जानकारी का परस्पर आदान-प्रदान करवाना, उन अच्छे कार्यों का संकलन करके उनकी पुस्तिका, ध्वनीमुद्रिका, सीडी (सांद्र मुद्रिका) तैयार करवाने की योजना है।

गाय केवल दूध के लिए न पाली जाय उसके गोबर व गोमूत्र का महत्व सामान्य समाज में स्थापित हो, सामान्य गोपालक उसके गोबर गोमूत्र से उसको पाल सके, सामान्य किसान, अपना बीज, अपना खाद, अपनी दवा, अपना बैल, अपना परिवहन, अपना दूध, अपना अनाज, अपना फल, अपनी सब्जी प्राप्त कर सके इसका प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है, इसलिए अभी सब प्रान्तों में एक-एक प्रशिक्षण केन्द्र बनाना, बाद में हर जिले व तालुका तक ऐसे केन्द्र स्थापित करना, जिसमें सामान्य गोपालक, किसान देख सके, सीख सके, कर सके। ये केन्द्र समाज के प्रेरणा केन्द्र बनें। आगे जाकर इन केन्द्रों में निम्न लिखित विषयों का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था रहेगी।

(1) गोपालन-गो संवर्धन (2) गो चिकित्सा

(3) गो - आधारित कृषि- स्वयं का बीज, खाद, दवा, बैल

(4) गो - ऊर्जा-बैल चालित ट्रैक्टर, बैल चालित जनरेटर, गोबर गैस से बिजली, गोबर गैस में से मिथेन अलग कर वाहन चलाना।

(5) पंचगव्य से भिन्न-भिन्न उत्पाद। (6) पंचगव्य द्वारा-मनुष्य चिकित्सा।

(7) पंचगव्य उत्पादों का विपणन।

(8) **गौ-रक्षा-** कटने को जा रही गायों को बचाना- समाज बन्धु, पुलिस अधिकारी, वकील, न्यायाधीशों को कानूनों का स्मरण कराना।

(9) **गोचर भूमि का संरक्षण-** उच्चतम न्यायालय के निर्णय की जानकारी देना।

(10) **गौ कथाओं का आयोजन** - अधिक से अधिक संत व कथावाचक सक्रिय हो।

(11) गौ-विज्ञान परीक्षा।

(12) हर प्रान्त व बाद में हर जिले में **गौ विज्ञान प्रशिक्षण केन्द्रों** का निर्माण व निरन्तर प्रशिक्षण वर्गों का आयोजन।

(13) गौ-उत्पादों के परिक्षण के लिये-प्रयोगशालाओं का चयन व परिक्षण।

(14) **सरकारों द्वारा गौ अभियारण्यों का निर्माण-** सभी देशी गौ-नस्लों, प्रजातियों का उचित संरक्षण, संवर्धन।

(15) बड़ी जेलों में सड़कों पर घूमरही निराश्रित गायों को रखवाना, कैदियों द्वारा संरक्षण व गौ-उत्पादों का निर्माण, कैदियों की पंचगव्य द्वारा चिकित्सा।

(16) **अभिनवप्रकल्प- स्वावलम्बी कामधेनु नगर** शहरों में उपनगर बसाते समय वहाँ के नागरिकों को शुद्ध हवा, पानी, अन्न, फल, सब्जी, दूध व संस्कार युक्त वायुमण्डल मिले वे बीमार ही न हों, आनन्द उत्साह का जीवन जी सकें ऐसी सुविधा उनको प्रदान की जाय इस उपनगर को बनाते समय यह भावना है। इस उपनगर में तीन प्रकार के आवास होंगे।

(1) 2000 वर्ग फुट क्षेत्र (2) 1500 वर्ग फुट क्षेत्र

(3) 1000 वर्ग फुट क्षेत्र - इसमें सब तरफ से हवा व प्रकाश प्राप्त होगा।

(4) इसके साथ गौशाला होगी जिससे शुद्ध, दूध, दही, छाछ (मठ्ठा), घी मिलेगा।

(5) जैविक खेती होगी- जिसमें जैविक अनाज, फल, सब्जी प्राप्त होगी।

(6) गोबर आधारित गैस प्राप्त होगी - वाहन चलाने हेतु - CNG गैस प्राप्त होगी।

(7) टहलने के लिए बड़े बाग बगीचे होंगे जहाँ शुद्ध जलवायु होगी।

(8) बालकों के लिए- आदर्श विद्यालय होगा।

(9) प्राकृतिक, आयुर्वेद, पंचगव्य, होम्योपैथी चिकित्सा की उत्तम व्यवस्था होगी।

(10) संस्कारों के लिए मन्दिर, यज्ञशाला, व्यायाम शाला व कथा प्रवचन व दृश्य श्रव्य की व्यवस्था होगी।

(11) सामाजिक, धार्मिक, विवाह आदि आयोजनों के लिए कल्याण मंडप की व्यवस्था रहेगी।

(12) पंचगव्य चिकित्सालय।

(13) छोटा औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र।

(14) कुल 5 एकड़ से 25 एकड़ भूमि की आवश्यकता।

(17) **स्वावलम्बी गोकुल गुरूकुल-** आवासीय विद्यालय, महाविद्यालय, तकनीकि व चिकित्सा महाविद्यालयों के छात्रों व कर्मचारियों अध्यापक प्राध्यापकों के लिये-गौशाला उससे दूध, दही, घी, गोबर गैस, बिजली, सब्जी, अन्न, फल, मशाले, चिकित्सा की व्यवस्था।

(18) **स्वावलम्बी सुरभी ग्राम समूह** - हर कृषक के घर में 5-10 गाय उसके दूध का संग्रह, ऐसे हर गाँव में अनेक कृषक तैयार करना, दूध का शहरों में विक्रय गोबर गैस से भोजन, बैलों से बिजली, परिवहन पंचगव्य से चिकित्सा। प्रत्येक गांव एक अच्छा साण्ड हो।

प्रत्येक ग्राम स्वावलम्बी व रोजगार युक्त, ऊर्जा युक्त बने, गाँवों से लोगों का पलायन रुके, व्यक्ति की सब आवश्यकताओं की पूर्ति गाँव में हो, व्यक्ति को शिक्षा व स्वास्थ्य की सब आधुनिकतम सुविधा प्रत्येक गाँव में उपलब्ध हों, गुरूकुल व्यवस्था को आधुनिक ढ़ंग से संवारा जाय जिसका **आधार गाय** हो। आवागमन के साधन सुखद व सुलभ हों। ग्रामों में सामाजिक स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य, समरसता, सुरक्षा, स्वावलम्बन व सम्पन्नता निर्माण करनी है, इसके लिये ग्राम विकास समितियों का निर्माण व उनका निरन्तर प्रशिक्षण। ऐसे दस ग्रामों का ग्राम संकुल बने।

4

॥ॐ॥

गाय ही क्यों ?

अद्‌भुत जीव गौमाता :-

अमेरिका के कृषि-विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तक (गौमाता एक आश्चर्यजनक रासायनशाला है) समस्त दुधारू चतुष्पाद जीवों में गौमाता ही एक ऐसा जीव है, जिसकी आंत 180 फुट लम्बी होती है। इसकी विशेषता यह है कि जो चारा ग्रहण करती है, उससे जो दूध में कैरोटिन नामक पदार्थ बनता है, वह भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है।

एक जर्मन वैज्ञानिक डॉक्टर जोसिस वेल्ट द्वारा लिखित किताब में वर्णित है कि 'भारत में गाय क्यों पूजी जाती है ?' वे लगभग तीन महीने भारत के गाँवों में रहे और भ्रमण किया तब उन्होंने पुस्तक लिखी है उसमें उन्होंने बहुत से आँकड़े दिये है उससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय गायें जो दुर्बल दिखाई देती हैं देश के लिए बहुत आर्थिक योगदान कर रही हैं। एक महत्वपूर्ण बात उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखी है कि जब यह पशुधन गाँव में नहीं रहेगा तो कम से कम 10 करोड़ से 20 करोड़ आदमी गाँव से शहरों की ओर पलायन करेंगे।

भारतीय नस्ल की गायें :

भारतीय नस्ल की गायों के दूध, घी, गोमूत्र और गोबर में जो गुण हैं वह विदेशी प्रजाति जैसे आस्ट्रियन, जर्सी, फ्रिजीयन अथवा इन नस्लों के साथ वर्णशंकर हुई भारतीय प्रजाति की गायों में ये गुण उस मात्रा में नहीं पाये जाते।

गुजरात में अनेक स्थानों पर 30 लीटर दूध देने वाली भारतीय गायें सुलभ हैं। भारतीय गायों पर विदेशों में भी शोध विस्तृत रूप से प्रगति पर हैं। इजराईल ने गिर-नस्ल की गाय से 120 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन करके दुनियाँ को बता दिया कि "भारतीय गाय" आज दूध की सर्वश्रेष्ठ गाय है यह गाय "गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड" में है। सरकार समर्थ गोशालाओं को गीर, साहीवाल, थारपारकर, राठी व हरियाणवी जैसी स्वदेशी दुधारू नस्ल की गायें उपलब्ध कराके, सांड उत्पादन केन्द्र के लिए अनुदान दें तो गोशालाएँ अपनी ओर से भारतीय गायों में ही नस्ल सुधार कर सकती हैं। इससे 4-5 साल बाद सूखे चारे व खली, बिनौले दाने से 4-5 लीटर प्रतिदिन दूध देने वाली नयी नस्ल की गायों से किसान का जीवन स्तर सुधारा जा सकता है। हरी घास व उत्तम पोषण आहार मिलने पर यही गाये 10 से 25 लीटर दूध प्रतिदिन दे सकती है। हरियाणा, गुजरात, इसराइल में इसके असंख्य उदाहरण है।

भारतीय नस्ल की गोमाता के पवित्र शरीर में 33 कोटि देवी देवताओं का वास है, जो किसी भी अन्य जीव में नहीं है।

गोपालक श्रीकृष्ण की बंसी :

गोदोहन-बेला के पूर्व प्रातःकाल बंसी ध्वनि में राग ललित, राग विभास भैरवी, आसावरी के स्वर निकालने पर अल्प समय में अतिशीघ्र दूध निकल आता है। गरुड़ पुराण में मृत्यु के बाद वैतरणी पार करने का माध्यम गाय को ही माना है।

पशु किसी कार्य को करने के लिए जितनी शक्ति का प्रयोग करता है, उसको 'भारवाहक पशु शक्ति' कहा जाता है । भारत में इस प्रकार की शक्ति की कोई कमी नहीं है । भारत में करीबन आठ करोड़ कार्य योग्य, पशु हैं, यद्यपि कोई वैज्ञानिक आंकड़े उपलब्ध नहीं है, तथापि विश्वास से कहा जा सकता है कि उपलब्ध पशु धन से 3 करोड़ किलोवाट प्रतिदिन ऊर्जा प्राप्त होती है । इतनी क्षमता की ऊर्जा-शक्ति केन्द्र स्थापित करने के लिए 18 खरब रुपयों से भी अधिक लागत आयेगी ।

हमारे देश की कृषि हेतु 90% ऊर्जा आज भी गोवंश से ही मिल रही है । रेल और ट्रक से देश का केवल 30% माल ढ़ोया जाता है, परन्तु बैलगाड़ी खेत से गाँव व मंड़ी तक देश का 70% माल ढोकर विदेशी डीजल की भारी बचत कर रही है। बैल शक्ति, बैल चलित हल केवल 10 इंच जमीन में जाने के कारण जमीन की नमी, केंचुए व अन्य जीवाणुओं को सुरक्षित रख उर्वरा शक्ति कायम रखता है, जबकि ट्रेक्टर की फाल के एक, डेढ़ फीट हो जाने के कारण जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो जाती है । मंहगे ट्रेक्टर, रासानिक खाद, बीज व कीटनाशक खरीदनें में असमर्थ भारत के 73% छोटे सीमान्त किसान जमीन बेचकर मजदूर बनने या महानगरों की झुग्गी झोपड़ियों में नारकीय जीवन जीने को मजबूर हो रहे है।

गाय के दूध की उत्कृष्टता :

"कार्बोहाइड्रेट, वसा, अल्बुमिनाइड, क्षार तथा विटामिन होने के कारण गाय का दूध, प्रौढ़ एवं बच्चों के लिए आदर्श व सम्पूर्ण आहार है" प्रो. डॉ. एन.एन. गोडबोले । गाय के दूध के पोष्टिक तत्व प्रतिशत में- पानी 87.3%, प्रोटीन्स 4.0%, वसा 4.0%, कार्बोहाइड्रेटस 4.0%, खनिज (मिनरल्स) 0.7% ऊर्जा (कैलोरी) 6.5% ।

गो दुग्ध में केल्शियम, सोडियम, मैग्नेशियम, पोटेशियम, क्लोरीन, लोहे आदि खनिज तत्व शामिल हैं जो जीवन विकास के लिए अत्यावश्यक है । साथ ही विटामिन ए, बी, सी, डी, ई के योग्य प्रमाण में होने के कारण यह शरीर को सशक्त बनाता है । विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है रसायन वैज्ञानिक गाय के दूध-घी को 'एटम-बम' के अणु-कणों के विष को शमन करने वाला मानते हैं ।

- गाय के दूध में ही Strontian तत्व है जो अणु विकिरण का प्रतिरोधक है ।
- गाय का दूध सुपाच्य और पोषक है जो कि माताओं, दुर्बल, बीमार, वृद्ध और बालकों के लिए गुणकारी है। यह शरीर की सातों धातुओं को बढ़ाता है ।
- गाय के दूध में 'सेरीब्रोसाइड, तत्व है जो दिमाग एवं बुद्धि के विकास में सहायक है व गाय का दूध शीतल है, अतः पित्त विकारों में बहुत लाभकारी है । अम्लपित्त (एसीडीटी, अल्सर, दाह) व शरीर में अधिक गरमी आदि में गाय का दूध उत्तम है ।

- जलोदर के रोगी को पानी पीना सख्त मना है वह गाय का दूध पीकर रहे तो रोग में सुधार होता है ।
- गो दूध की बनाई छाछ और दही भी पौष्टिक है । इन दोनों के नित्य सेवन से असाधारण आरोग्य लाभ मिलता है । दूध का मावा, मिठाईयाँ, दूध पाक आदि पौष्टिक है, वह धातुवर्धक, वीर्यवर्धक और कांतिवर्धक है ।
- देश में जितना दूध पैदा होता है, उसका 44% गायों से मिलता है।

भारतीय औषधि विज्ञान परिषद् के अनुसार :

- गाय के दूध में विटामिन ए 100 आई.यू. (इन्टरनेशनल युनिट)
- भैंस के दूध में विटामिन ए 140 आई.यू.
- दूध गरम करने या तापने के बाद (मावा बनने तक)

  गाय के दूध के मावे में विटामिन ए 400 आई.यू.

  भैंस के दूध के मावे में विटामिन कुछ भी नहीं । इसलिए पेड़ा गाय के दूध में ही बनाया जाना चाहिए ।
- गाय के घी में विटामिन ए 1900 आई.यू. ।
- भैंस के घी में विटामिन ए 900 आई.यू. (नेडेप-काका)

गाय का घी और हवन :

रूस में गाय के घी से हवन करके उसके बारे में अनुसंधान किया गया था । जहाँ-जहाँ जितनी दूरी में उस हवन के धुएँ का प्रभाव फैला, उतने दायरे में किसी भी प्रकार के कीटाणु अथवा बेक्टीरिया नहीं रहे, वे क्षेत्र कीटाणुओं और बेक्टीरिया के प्रभाव से मुक्त हो गये ।

कृत्रिम वर्षा कराने के लिए वैज्ञानिक मुख्य रूप से प्रोपलीन ऑक्साइड गैस का प्रयोग करते हैं । यही प्रोपलीन ऑक्साइड गैसे हमें गाय के घी को हवन करने पर प्राप्त होती है ।

गाय के घी को चावल के साथ मिलाकर जलाने पर अत्यन्त महत्वपूर्ण गैसें जैसे इथीलीन ऑक्साइड, प्रोपलीन ऑक्साइड, फार्मल्डीहाईड इत्यादि बनती हैं । इथीलीन ऑक्साइड आजकल सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली जीवाणु रोधक गैस है, जो ऑपरेशन थियेटर से लेकर जीवन रक्षक औषधि बनाने में उपयोगी है ।

गाय के गोबर को सुखाकर जलाने पर अनेक उपयोगी रसायन जैसे मेन्थोल, फिनोल, अमोनिया एवं फार्मेलिन का उत्सर्जन होता है । इन सभी रासायनों की जीवाणु क्षमता चिर-परिचित है । आज भी अस्पताल, प्रयोगशाला इत्यादि में इन्हीं का प्रयोग किया जाता है ।

प्रदूषण का निदान :

गोघृत के हवन से कार्बन-डाई-ऑक्साइड के बढ़ते खतरे से बच सकते हैं ।



5

॥ॐ॥

पंचगव्य से मनुष्य चिकित्सा

त्रिदोष से मुक्ति :

वात, पित्त और कफ को सम रखने से किसी भी प्रकार की कोई बीमारी नहीं होती है। त्रिदोष को सम संतुलन में रखने के लिए गाय का घी दिन में 3 बार सुबह, दोपहर, रात में शयन काल में तीन-तीन बूंद नाक में डालने से त्रिदोष निकल जाता है तथा मानव अपने आपको स्वस्थ रख सकता है ।

रतौंदी से छुट्टी :

पीले रंग का केरोटीन नामक द्रव्य केवल गाय के घी में है । केरोटीन तत्व की कमी से ही मनुष्यों के मुँह, फेफड़ों, मूत्राशयों की झिल्ली में अन्य रंगों का कैंसर हो जाता है । केरोटीन तत्व शरीर में पहुँचकर विटामिन ए तैयार करता है। यह त्वचा और आँखों के लिए आवश्यक है, इससे 'रतौंदी' रोग दूर होता है ।

हृदय रोग का अचूक निदान :

धमनियाँ अवरूद्ध हो जाने पर मनुष्य को बाय-पास सर्जरी करवानी पड़ती है । एंसे बीमारी के समय में :-

1.	साबुत उड़द काले छिलके का	10 ग्राम
2.	गुग्गल	10 ग्राम
3.	अरंडी का तेल	10 ग्राम
4.	गाय का ताजा मक्खन	10 ग्राम

इस तरह चार उक्त घटकों में उड़द को रात में भिगोकर सुबह गुग्गल के साथ पीस कर चटनी बनाये तत्पश्चात् उसमें अरंडी का तेल मिलाकर ताजा मक्खन मिलाये । इससे एक प्रकार का मलहम तैयार हो जायेगा यह लेप हृदय पर नियमित स्नान के बाद लगावें । यह प्रयोग 1 महीने तक चालू रखने से सब तरह की धमनियों का अवरोध निकल जाता है ।

गो दुग्ध

सर्वरोग नाशक :

गाय की रीढ़ में 'सूर्य केतु' नामक नाड़ी होती है जो सूर्य के प्रकाश में जागृत होती है, इसलिये गाय सूर्य के प्रकाश में रहना पसन्द करती है, भैंस छाया में रहती है। सूर्य केतु नाड़ी जागृत होने पर स्वर्ण रंग का वह पदार्थ छोड़ती है, इसी कारण गाय के दूध का रंग पीला होता है और घी स्वर्ण के रंग का होता है जो सर्व रोगनाशक और विष विनाशक होता है। गाय के दूध में स्वर्ण तत्व पाये जाते हैं यह तत्व माँ के दूध के अतिरिक्त दुनियाँ में किसी भी पदार्थ में नहीं मिलते हैं।

नशे से मुक्ति :

गाय के दूध में अद्भुत औषधीय गुण है। गाय के दूध से बनी छाछ किसी भी प्रकार के नशे जैसे गांजा, चिलम, तम्बाकू, शराब, हेराइन, स्मेक इत्यादि से होने वाले प्रभाव को कम ही नहीं करती, अपितु नियमित सेवन से नशे की इच्छा भी धीरे-धीरे कम होती जाती है।

टी.बी. मिटता है :

गाय को शतावरी खिलाकर दूध प्राप्त कर उसका उपयोग करने पर टी.बी. रोग मिटता है।

मलेरिया के विरूद्ध रामबाण :

यदि 400 ग्राम दूध को उबाला जाय और आकड़े (आक) पौधे की अंगूठे जितनी मोटी हिलाने योग्य हरी लकड़ी से दूध को हिलाया जाता रहे तो कुछ समय में दूध फट जायेगा। उस फटे हुए दूध को इतने समय तक हिलावै कि पानी का सम्पूर्ण अंश समाप्त हो जावे और खोवा (मावा) तैयार हो जाये, तब उसमें शक्कर उचित मात्रा में मिलाकर, खाने योग्य ठंडाकर रोगी को बुखार उतर जाने पर खिलाएँ मलेरिया से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जावेगा।

कोलेस्टरोल नहीं बढ़ता :

गाय के दूध से कोलेस्टरोल नहीं बढ़ता बल्कि हृदय एवं रक्त धमनियों के संकोचन का निवारण होता है।

कैन्सर नहीं होता :

कारनेल विश्वविद्यालय के पशुविज्ञान के विशेषज्ञ प्रो. रोनाल्ड गोरायटे के अनुसार गाय के दूध में एम.डी.जी.आई. प्रोटीन के कारण मनुष्य शरीर की कोशिकाएँ कैन्सर युक्त होने से बचती है।

कैन्सर मिटता है :

गाय के दूध में उसी गाय का घी मिलाकर पीने से और गाय के घी से बना हुआ गरम-गरम हलुवा खाने से कैन्सर मिटता है ।

संग्रहीणी का निदान :

खाया पीया बिल्कुल न पचता हो इक्कीस किशमिश गोमाता के दूध में ओटाएँ उसके पश्चात् किशमिश निकालकर खा लें, दूध में शहद मिलाकर पीयें, आमों का मौसम हो तो 'आमरस' पीयें, किन्तु उसमें शक्कर नहीं डाले । भोजन हल्का (तरल) करें ग्यारह दिनों में संग्रहणी मिट जायेगी ।

मलेरिया का ईलाज :

किशमिश और मुनक्का के पांच-पांच दाने गो दूध में औटाकर रोगी को सुबह-सुबह खिला पिला दें । मलेरिया पुराना हो तो 10 ग्राम सौंठ चूर्ण भी डाल दें मलेरिया भाग जायेगा ।

यौवन रक्षा :

जंगल में चरने वाली गाय का दूध-घी और शहद से बुढ़ापा जंगल में भाग जाता है।

अद्‌भुत प्रयोग :

मेरे पुत्र विनय कुमार की पत्नि सौ. विनीता जब गर्भवती थी और 7 मास का गर्भ था उस वक्त बच्चे का पूर्ण विकास नहीं था । डॉक्टरों को खामगांव तथा अकोला में बताया, सबका यही कहना था कि बच्चे में कोई वृद्धि नहीं है, साधारण प्रसव नहीं होगा तथा बच्चे को इन्क्यूबेटर मशीन में रखना पड़ेगा । बचे हुए दो महीनों में हमने बहू के हाथ से गाय को गुड़ रोटी दिलाई तथा गाय की परिक्रमा नित्य करायी, जिसके परिणाम स्वरूप साधारण प्रसूति हुई । पुत्री श्रद्धा चंचल और होशियार है, 4-5 मास पहले बोलने तथा चलने लगी, बहुत ही सुन्दर तथा होनहार बच्ची है । यह गोमाता का आशीर्वाद है ।

(महावीर प्रसाद अग्रवाल, खाम गांव, महाराष्ट्र)

संतान लाभ :

संतान की इच्छा रखने वाली महिला यदि गाय का श्रद्धाभाव पूर्वक पूजन एवं परिक्रमा कर पुष्य-नक्षत्र के पावन दिवस से कपास के पौधे की कोमल जड़ (मूल) को गाय के दूध में डालकर अच्छी तरह उबालें और उबले हुए दूध को पीने योग्य ठंडाकर क्रमशः सात दिन तक सेवन करें, अल्पकाल में ही वह निश्चित गर्भावस्था को प्राप्त होगी।

मेधावी, गोरा बालक प्राप्त करने हेतु :

गर्भवती महिला अगर चांदी की कटोरी में गाय के दूध से जमाया हुआ दही सेवन नित्य करे तो आने वाला बालक मेधावी और तेजस्वी होगा । (अनुभूत प्रयोग है)

सशक्त एवं गुणवान बालक की प्राप्ति के लिए :

गर्भवती महिला रोज श्रद्धापूर्वक पूजन कर एवं गाय की कम से कम एक परिक्रमा कर उसे अपने हाथ से रोटी तथा गुड़ खिलाये और सुबह शाम गोदुग्ध का पान करे तो निश्चित ही आने वाली संतान चपल, सशक्त, मेधावी एवं निरोगी होगी और प्रसव भी सहज ढ़ंग से होगा। प्रसव पीड़ा कम होगी। यह प्रयोग प्रतिदिन करना आवश्यक एवं अनिवार्य है। (स्वानुभूत प्रयोग)

स्वास्थ्य रक्षा का सरल और सर्वमान्य उपाय :

दूध ही एक मात्र पदार्थ है, जो सब पोष्टिक तत्वों से परिपूर्ण है और जिसे हम पूर्ण भोजन कह सकते हैं। बढ़ते हुए बच्चों के लिए इससे बढ़कर कोई जीच नहीं है। शरीर को ठीक तरह से बढ़ाने और पुष्ट करने में दूध की बराबरी करने वाली कोई दूसरी वस्तु नहीं है। अमेरिकन पत्र 'फिजीकल कल्चर' के संपादक और प्रसिद्ध दुग्धाहार चिकित्सक बनार मेफेडर का कथन है कि इस जगत में गाय के दूध से बने मक्खन के समान सर्वगुण सम्पन्न पौष्टिक खाद्य पदार्थ कोई दूसरा नहीं है।

गाय के रंग का प्रभाव :

काली गाय का दूध वात नाशक तथा अधिक गुणवान होता है। पीली (लाल) गाय का दूध वात तथा पित्त नाशक होता है। श्वेत गाय का दूध कफनाशक होता है और लाल एवं चितकबरी गो का दूध वातनाशक होता है।

गो क्षीरं जीवनं बल्यं रक्त पित्तानिलापटम्।
आयुष्यं पुंस्त्व कृत्यथ्यं मेघ्यं वृष्यं रसायनम्॥

गाय का दूध प्राणप्रद, रक्त पित्तनाशक, पौष्टिक रसायन है, उनमें भी काली गाय का दूध त्रिदोषनाशक, परमशक्तिवर्द्धक, और सर्वोत्तम होता है। गाय अन्य जीवों की अपेक्षा सत्वगुण युक्त है और दैवी शक्ति का केन्द्र स्थान है, दैविक शक्ति के प्रभाव से दूध में सात्विक बल आता है, भोजन भी ठीक से पचता है। यह कभी रोग उत्पन्न होने नहीं देता। गाय के दूध को हमेशा छानकर ही पीना चाहिए, गाय का बाल (रोम) पेट में जाना बहुत ही हानिकारक है, इससे क्षय रोग भी हो सकता है।

आँख- आख दुखने पर, लाल होने पर, देशी गाय के दुध के फोये दोनों आँखों पर रखना लेटे रहना- इससे आँखों की जलन व दर्द ठीक होगा। आई फ्लु, जय बंगला की बीमारी होने पर आकड़े का दूध दोनो पैरों के नाखूनों में सुबह-सुबह लगाना, इससे रोग ठीक होता है।

गोमूत्र

कामधेनु वटी :

भारतीय गाय के गोमूत्र से कामधेनु वटी बनाकर 108 रोगों पर सफलतापूर्वक निदान किया गया है, कोलेस्टरोल बढ़ना- कोलेस्टरोल एक वसामय द्रव्य है, जिसकी रक्त में सामान्य से अधिक मात्रा होने पर विभिन्न विकारों की उत्पत्ति होती है। गोमूत्र 2-2 चम्मच की मात्रा में सुबह शाम सेवन करने से बढ़ा हुआ कोलेस्टरोल कम हो जाता है।

खनिज तत्व :

वैज्ञानिकों ने गोबर में 16 गोमूत्र में 24 प्रकार के खनिज तत्व लवण- रसायन बताये हैं जो मानव और खेती दोनों में अपरिमित लाभकारी है। धरती के लिए रासायनिक खाद उसका प्राकृतिक आहार नहीं है। धरती का प्राकृतिक आहार गोबर की खाद है इससे धरती की उर्वरा शक्ति बनी रहती है।

मोटापा :

यह शरीर के लिए अति कष्टदायक तथा बहुत से रोगों को आमंत्रित करने वाला विकार है। स्थूलता से मुक्ति पाने हेतु आधा गिलास ताजा पानी में चार चम्मच गोमूत्र, दो चम्मच शहद तथा एक चम्मच नींबू का रस मिलाकर नित्य पीना चाहिए। इससे शरीर की अतिरिक्त चर्बी समाप्त होकर देह को सुन्दर बनाती है।

हृदय रोग का निदान :

गोमूत्र के कारबेलिक एसिड होने से उसकी स्वच्छता और पवित्रता बढ़ जाती है, वैज्ञानिक रीति से गोमूत्र में फॉस्फेट पोटाश, लवण, नाइट्रोजन, यूरिक एसिड होते हैं। जिन महीनों में गाय दूध देती है, इसके मूत्र में लेक्टोन रहता है, जो हृदय और मस्तिष्क के रोगों के विनाश में बहुत सहायक होता है।

हृदय रोग :

गोमूत्र में स्थित विभिन्न खनिज पदार्थ हृदय हेतु रसायन का कार्य करते हैं। इसके सेवन से रक्त का प्रभाव नियमित तथा पर्याप्त मात्रा में होता रहता है। गोमूत्र का नित्य सेवन हृदयाघात से शरीर की रक्षा रहता है।

उदावर्त :

उदर में गैस अधिक बनने से यह विकार उत्पन्न होता है। प्रातःकाल आधा कप गोमूत्र में काला नमक तथा नींबू का रस मिलाकर पीने से गैस रोग से कुछ दिनों में ही छुटकारा मिल जाता है। इस व्याधि में गोमूत्र को पकाकर प्राप्त किया गया क्षीर भी गुणकारी है। भोजन के प्रथम ग्रास में आधा चम्मच गोमूत्र क्षार तथा एक चम्मच गाय का घी मिलाकर खाने से वायु नहीं बनती है।

उदर में कृमि :

इस रोग के होने पर आधा चम्मच अजवायन के चूर्ण के साथ चार चम्मच गोमूत्र एक सप्ताह तक सेवन करना चाहिये । बच्चों को इसकी आधी मात्रा पर्याप्त है ।

जलोदर :

पेट में पानी भर जाने पर गोमूत्र का सेवन हितकारी है । 50-50 ग्राम गोमूत्र में दो-दो ग्राम यवक्षार मिलाकर पीते रहने से कुछ सप्ताह में पेट का पानी कम हो जाता है । जलोदर रोगी को गो दूध का ही पान करना चाहिए ।

विबंध :

जीर्ण विबंध या कब्ज होने पर गोमूत्र का पान करना चाहिए । प्रातः सायं 3-3 ग्राम हरड़े के चूर्ण के साथ इसका सेवन करने से पुराना कब्ज नष्ट हो जाता है ।

बवासीर :

यह अत्यन्त कष्टदायक रोग है । गोमूत्र में कलमीशोरा 2-2 ग्राम मिलाकर पीने से बवासीर में बहुत लाभ होता है । गर्म गोमूत्र का स्थानीय सेक भी फायदा पहुँचाता है । खूनी बवासीर में गोमूत्र का एनिमा बहुत लाभप्रद है, मस्से सर्वथा सिकुड़ जाते हैं ।

यकृत के रोग :

जिगर का बढ़ना, यकृत मे ंसमजन तथा तिली के रोगों में गोमूत्र का सेवन अमोघ औषधि है । पुनर्नवा के क्वाथ में समान भाग गोमूत्र मिलाकर पीने से यकृत की शोथ तथा विकृति का शमन होता है । इस अवस्था में गोमूत्र सेक भी लाभप्रद है। गर्म गोमूत्र में कपड़ा भिगोकर स्थान पर सेक करना चाहिए ।

क्षय रोग से छुटकारा :

यदि किसी मनुष्य को क्षय रोग हो तो, गो के उस बछड़े का मूत्र जो केवल दूध पर ही निर्भर रहता है, देने से रोग दूर हो जाता है ।

चर्म रोग से मुक्ति :

गोमूत्र में पुरुषों तथा गर्भवती स्त्रियों के गुप्त रोगों का निवारण करने की शक्ति विद्यमान है खुजली, दाद, एग्जिमा तथा अन्य त्वचा रोगों में गोमूत्र पीने से एवं गोमूत्र का लेप करने से शीघ्र लाभ होता है । शरीर की गर्मी (ज्वर) और भारीपन में गोमूत्र लाभप्रद है ।

नासूर :

इसे नाड़ी व्रण भी कहते हैं । इस रोग की जड़ गहरी तथा शल्यक्रिया करनी पड़ती हैं । गोमूत्र का सेवन इस व्याधि को समूल नष्ट करने की क्षमता रखता है । प्रातः सायं 4-4 चम्मच गोमूत्र के पीने तथा प्रभावित स्थल पर गोमूत्र की पट्टी रखने से एक दो माह में रोग मुक्ति हो जाती है ।

शोथ :

शरीर की धातुपात-क्रिया में विषमता होने से शोथ उत्पन्न होता है । पुर्नवाष्टक क्वाथ के साथ गोमूत्र का सेवन शोथ को दूर करता है । इस रोग में घी तथा नमक का प्रयोग नहीं करना चाहिए । शोथ पर गोमूत्र का मर्दन भी लाभकारी सिद्ध हुआ है।

संधिवात :

जोड़ों का नया तथा पुराना दर्द बहुत कष्टकारक होता है । महारास्नादि क्वाथ के साथ गोमूत्र मिलाकर पीने से यह रोग नष्ट हो जाता है । सर्दियों में सोंठ के 1-1 ग्राम चूर्ण से भी इसका सेवन किया जा सकता है । दर्द के स्थान पर गर्म गोमूत्र का सेक भी करना चाहिए । खाज, कुष्ट आदि विभिन्न चर्म रोगों के निवारण हेतु गोमूत्र रामबाण औषधी है । नीमगिलोय के क्वाथ के साथ दोनों समय गोमूत्र का सेवन करने से रक्त दोष व अन्य चर्म रोग नष्ट होते हैं। जीरे को महिन पीस कर गोमूत्र से संयुक्त कर लेप करने व गोमूत्र की मालिश करने से चमड़ी के रोग दूर हो जाता है ।

'गो मूत्र' (वृहस्पति स्मृति 5/38) के अनुसार गोमूत्र में गंगाजल विद्यमान है, अनेक प्रकार से गंगाजल का परिक्षण करने के बाद यह सिद्ध हुआ है कि गंगाजल महामारी आदि के किटाणुओं को दूर कर देता है और उदर रोगों को नष्ट कर स्वास्थ वृद्धि करता है, गोमूत्र में गंगाजल के रहने से ये सारे गुण गोमूत्र में भी विद्यमान हैं ।

गोमूत्र उदर रोगों, श्वाँस, प्रमेह, मधुमेह, अजीर्ण तथा जलोदर के लिए अचूक दवा है । कुष्ट रोग और हृदय रोग के लिए तो यह रामबाण है । गर्म किये हुए गोमूत्र को कान में डालने से कान का बहना बन्द हो जाता है । गोमूत्र से आँखों को धोने से उनकी ज्योति वृद्धावस्था तक बनी रहती है ।

रघुवंश में नन्दिनी गाय के मूत्र से रघु को दिव्य-दृष्टि की प्राप्ति प्रसिद्ध ही है । काली गाय के मूत्र को पन्द्रह दिन तक पीने से गले में सुन्दर स्वर उत्पन्न होता है । पेट के कीड़े गोमूत्र के पीने से मर जाते हैं । इसीलिये प्रसूता स्त्री के लिए गोमूत्र का पान महत्वपूर्ण बताया गया है, गोमूत्र देशी गाय का ही होना चाहिये-वृषभ का नहीं। हिन्दुओं के सभी वृत, उपवास कुशोदक युक्त पंचगव्य के सेवन से पूरे होते हैं । गोमूत्र व गोमय का उपयोग कैसे व कितनी मात्रा में करें यह आयुर्वेद चिकित्सकों की सलाह से करना हितकारी होगा । गोमूत्र तीक्ष्ण, गर्म, क्षार, कषेला मेघाजनक मधुमेह, कफ-वातनाशक, भेदक, रक्तपित्त को शान्त करने वाला तथा तिल्ली, यकृत, मल, शूल, मुख रोग, नेत्ररोग, गुल्म, आमवात,गुदारोग, मूत्र रोध, खांसी, कुष्ट उदररोग एवं कृमि समूह का नाश करने वाला है ।

'गोमूत्र से चिकित्सा'

1. **कैन्सर (कर्क रोग) में-** 20 ग्राम गोमूत्र अर्क 40 ग्राम पानी मिलाकर 20-25 तुलसी के पत्ते पीसकर सुबह-सायं खाली पेट लगातार 3 महीने लेने से कैन्सर (कर्क रोग) ठीक होता है। भोजन में देशी गाय का दूध लें।

2. **मधुमेह रोग रोग में** - 20 ग्राम गोमूत्र अर्क 40 ग्राम पानी मिलाकर 6-7 बिल्व पत्र के पत्ते पीसकर मिलाकर सुबह सायं खाली पेट लें। भोजन के बाद एक ग्राम तुलसी का चूर्ण पानी से लें।

3. **दमा, अस्थमा, स्वांस रोग में-** 20 ग्राम गोमूत्र अर्क 40 ग्राम पानी 10 ग्राम अडूसे का रस के साथ सुबह सायं लें। तेल का प्रयोग कम करें। लाभ होगा।

4. **हृदय रोग में-** 20 ग्राम गोमूत्र अर्क 40 ग्राम पानी आधा चम्मच अर्जुन की छाल के चूर्ण के साथ लें।

5. **गुरदे की बीमारी में-** 20 ग्राम गोमूत्र अर्क- 40 ग्राम पानी 10 ग्राम गिलोय के रस के साथ लें।

6. **एक्जिमा होने पर-** गोमूत्र में अजवायन पीसकर लेप करें लाभ होगा।

7. **गठिया रोग में-** 20 ग्राम गोमूत्र 40 ग्राम पानी सुबह-सायं पीना- गोमूत्र को हल्का गर्म करके सेक करना लाभ होगा।

8. **कान-** बछिया का गोमूत्र 100 ग्राम उसमें 10 ग्राम अजवायन डालकर उबालना, धूँआ देने पर उतारकर ठंडाकर छानना, शीशी में भरना दो-दो बूंद प्रातः सायं कान में डालना इससे कान का दुखना, मवाद आना ठीक होगा ।

9. **दांत-** सात दिन गो मूत्र के कुल्ले करने पर दांत का दर्द ठीक हो जाता है। गोमय भस्म से बना गोमय दन्त मंजन बहुत ही लाभकारी है ।

गोदधि

सब प्रकार के दहियों में गाय का दही श्रेष्ठ और सब गुण प्रदान करने वाला है।

गव्यं दुध्युतमं बल्यं पाके स्वादु रुचि प्रदम्
पवित्र दीपनं स्निरधं पुष्टि कृत्पवनापहम्
उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम्

गाय का दही उत्तम बलकारक, पचने में स्वादिष्ट, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पुष्टिकारक और वातविनाशक है ।

गोतक्र- गाय का तक्र अर्थात् मठ्ठा त्रिदोष निवारक, पथ्यों में उत्तम, दीपन, रूचिकारक मेधाजनक तथा बवासीर और अतिसार रोग में हितकारी है । गाय के दही की छाछ अत्यन्त ही लाभकारी है, भोजन के बाद तक्र का सेवन अमृत के समान है ।

पेट सम्बन्धी सभी विकारों में- भोजन के बाद 20-20 ग्राम तक्रासव रोज लें- 15 दिन में पेट में गैस बनना, भूख न लगना, कब्ज, दस्त आदि रोगों में लाभ होगा।

'गो घृत'

"घृतवै देवानामन्नम्" यह देवताओं का अन्न व प्राणी मात्र का जीवन है ।

घृतस्य स्तोकं सकृद आश्नाम्-ऋग्वेद 10/85/13 घृतस्य स्तोकं सकृद आश्नाम् (शतपथ. 11/5/1/20 दोनों जगह यह कथन ऋषिका उर्वशी का है इसलिए देवयज्ञ में शुद्ध गोधृत का ही विधान है, देवता इसी से प्रसन्न होते हैं ।

गीता में- घी में पके स्निग्ध आहार को तमोगुण हरने वाला व सात्विक कहा गया है। गीता (17/8) घृतं प्राश्य विशुद्धयति (मनु. 5/103) घी विष का भी नाश करता है, सर्पदंश वालों को विष दूर करने के लिए गाय का घी पिलाने का विधान हैं । छोटे बच्चे को जातकर्म संस्कार के समय सोने की शलाका से मधु व गोघृत चटाया जाता है, इससे बालक का स्वर मधुर व मेधा का विशेष विकास होता है । अन्न दोष को दूर करने के लिए भोजन सामग्री में घी देने का विधान है । घी से पञा बासी अन्न भी शुद्ध ही माना जाता है ।

गाय का घी बुद्धि, कान्ति और स्मरण शक्ति दायक बलकारक, मेधाजनक, पुष्टि कारक, कफ नाशक, श्रम निवारक, पित्तनाशक, अग्निप्रदीपक, हृदय के लिए हितकारी पचने में मधुर, वीर्य वर्द्धक शरीर को स्थिरता देने वाला है । परन्तु यह देशी गाय का शुद्ध घी ही हो । अनेक ग्रन्थों में इसका वर्णन है । 'आयुर्वै घृतम्' (तैति. सं. 2/3/2/2) गाय के घी का दीपक जलाना लाभप्रद है । इसके निकट बैठकर की गई उपासना विशेष फलवती होती है । इससे कई दूषित कीटाणु नष्ट हो जाते हैं । मृतक के शरीर पर घी का लेप करने से शरीर से निकलने वाले किटाणु नष्ट हो जाते है । जिस घर में घी का दीपक नहीं जलता उस घर में भूत-प्रेत का निवास माना जाता है । 'मनु' के अनुसार शुद्ध भोजन में ही घी लेना चाहिए । जूठा भोजन किसी को भी नहीं देना चाहिए ।

नवनीत- गाय का मक्खन हितकारी वीर्य वर्द्धक वर्णकारक, बलकारक, अग्नि प्रदीपक तथा वात, पित्त, रुधिर विकार, क्षय, बवासीर, लकवा और खाँसी को दूर करता है। गाय का नवनीत अत्यन्त बलप्रद और पुष्टिदायक है । भगवान कृष्ण को नवनीत सर्वाधिक प्रिय है ।

सिर- माईग्रेन (आंधासीसी) डिप्रेशन, अनिद्रा में देशी गाय का शुद्ध घी हल्का गरम करके तीन-तीन बूँद नाक में डालना, तकिया हटा देना खैंचना नहीं, कुछ ही समय में गहरी नींद आ जायेगी, कुछ समय में सब बीमारी भाग जायेंगी ।

"गोमय"

गोबर- सभी प्रकार के चर्म रोगों की श्रेष्ठ औषधी है । यह मधुमक्खी, बिच्छु आदि अनेक कीड़ों के काटने से फैले विष को भी दूर करता है । जले हुए पर भी गोमय रस लगाना लाभकारी है । पर यह स्वस्थ गाय का हो ।

आयुर्वेद के अनुसार विभिन्न रंग वाली गायों के गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी में विभिन्न गुण उपस्थित रहते हैं, जो गायें जंगल में चरने जाती हैं, विभिन्न प्रकार की वनस्पति ग्रहण करती हैं उन्हीं गायों का पंचगव्य अधिक उपयोगी है ।

तृणं चरन्ती अमृतं क्षरन्ती । (कठोपनिषद्)
अग्रमग्र चरन्ती नामोषधीनां वने वने ।
तासां वृषभमत्नीनां पवित्र कायशोधनम् ।
तन्मे रोगाँश्च शोकाँश्च पापं मे हर गोमयः ।।

अतः भारतीय गायों के लिए पर्याप्त गोचर भूमि का होना अनिवार्य है, विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है शुद्ध गल कम्बल वाली भारतीय नस्ल की गायों के पंचगव्य में ही सब रोग दूर करने की शक्ति है ।

- सभी प्रकार के विष का प्रभाव समाप्त करने के लिए देशी स्वस्थ गाय का गोबर 200 ग्राम; पानी 400 ग्राम, हल्दी 20 ग्राम मिलाकर पिलाने से उल्टी होगी, विष का प्रभाव कम हो जायेगा ।

- गाय के गोबर का लेप दीवारों, आंगन चूल्हे पर करने से सभी प्रकार के कीटाणुओं व रेडियो धर्मिता के प्रभाव से बचा जा सकता है । भोपाल गैस काण्ड में इसका प्रभाव देखने को मिला है ।

'गोमय'- गाय के गोबर में लक्ष्मी जी का निवास है । गोबर-गोमूत्र भूमि का स्वाभाविक भोजन है, इससे पृथ्वी की उत्पादन शक्ति बढ़ती है । गोबर से गेहूँ व कपास की खेती सर्वोत्तम होती है । इससे हमारी अन्न वस्त्र की आवश्यकता पूर्ण होती है । गोबर में परमाणु विकिरण व आकाशीय विद्युत को भी रोकने की क्षमता है । गोबर व गोमूत्र में पोटाश, सोडा, मैग्नेशिया, शोरा, चूना, लोह भस्म, गन्धक, फासफोरस, एमोनिया आदि अनेक के तत्व मिले होते हैं । जो अनेक रोगों का नाश करते हैं ।

'गोबर से चिकित्सा'

1. **सब प्रकार के त्वचा रोग में** गाय के गोबर का लेप करके थोड़ी देर धूप में बैंठे एक महिना करें लाभ होगा।

2. **सांप, पागल कुत्ता काटने पर जहर खाने पर** 200 ग्राम गोबर + 400 ग्राम पानी घोलकर 20 ग्राम हल्दी मिलाकर तुरन्त पिलाना, गोबर जहर को सोख कर उल्टी के माध्यम से बाहर निकाल देगा-लाभ होगा।

3. **जलने पर-** आग से, बिजली से, साइलेंसर से जलने पर गोबर का घोल बनाकर उसमें मोटा कपड़ा भिगोकर ऊपर नीचे उढ़ा दें- थोड़ा-थोड़ा गोबर रस डालते जाये- गोबर रस छानकर पिलाते जाये बहुत शीघ्र लाभ होगा।

4. **कमर दर्द, स्लिप डिस्क में** 4-5 क्रमांक के छल्ले खिसकने पर गोबर में गोमूत्र मिलाकर लेपकर घंटे भर लेट जाये बाद में धोलें। कम से कम 15 दिन करें अवश्य लाभ होगा।

5. **गर्भवती बहनें सुखमय प्रसव-** प्रसव होने से सात दिन पहले से 50 ग्राम गोबर का रस (देशी स्वस्थ गाय) 5 तुलसी के पते पीसकर मिलाकर पीने से बिना शल्य क्रिया के आराम से प्रसव होगा। अनुभूत प्रयोग है। देशी गाय के गोबर से शरीर लचीला हो जाता है।

'अन्य उपयोगी चिकित्सा'

टॉन्सिल- होने पर केले के छिलके का नरम वाला हिस्सा अन्दर रखकर रात को गले पर बाँध देना । सुबह हटा देना इससे टॉन्सिल में आराम मिलेगा ।

खांसी, जुकाम, सर्दी-

(1) अजवायन कूटकर तवे पर गर्म कर रूमाल में बाँध कर हल्के-हल्के सूंघना, इससे छींके आना, नाक से पानी गिरना कुछ ही समय में बंद हो जायेगा ।

(2) पानी को अच्छी तरह एक भगोनी में उबालकर उसमें एक मुठ्ठी बाजरा या विक्स थोड़ा डालकर ऊपर के कपड़े उतारकर चद्दर ओढ़कर भाप लेने से फेफड़ों में जमा सब कफ निकल जायेगा, रात में सोते समय करना बहुत उपयोगी है ।

(3) आधी चम्मच हल्दी व जरा सा नमक की फक्की लेकर ऊपर से गुनगुना पानी पीने, नमक कफ को गला देगा, हल्दी-कफ को फाड़ देगी कफ बाहर निकल जायेगा ।

(4) एक चम्मच अदरक का रस, थोड़ा नीम्बू का रस व एक चम्मच शहद मिलाकर लेने से सर्दी जुकाम में काफी लाभ होगा।

गला- नमक डालकर पानी गुन गुनाकर गरारे करने से लाभ होता है ।

दाँत- दांत दर्द में फुलाई हुई फिटकड़ी के पानी से कुल्ला करने से मसुड़ों के बीच फंसा दूषित अन्न निकल जाता है, मसूड़ों के बीच की जगह सिकुड़ जाती है, लाभ होता है।

पेट दर्द- अपच, अजीर्ण (फुड पोयजनिंग) दूषित भोजन करने से हुई परेशानी के लिए अमृत धारा की एक-एक बूंद लेने से निश्चित लाभ होता है । उल्टी दस्त में भी लाभ होता है ।

उल्टी होने पर- दो लोंग घिसकर थोड़ा पानी मिलाकर गरम कर उसमें जरा सा नमक मिला कर पिलाने से शीघ्र ही उल्टी होना बन्द हो जाता, पेट में जो गैस बनी है उसको लोंग सोंख लेती है ।

पेट में आफरा होने पर- जरा सा हिंग घोलकर नाभी में भर दें- उसके बाहर भी लगा दें । आराम हो जायेगा । थोड़ी सी अजवायन व कालानमक थोड़ा सा मिलाकर फक्की लेने से भी आराम मिलता है ।

कब्ज- पेट में कब्ज होने पर गोमूत्र हरडे चूर्ण रात को सोते समय एक चम्मच चूर्ण दूध या पानी से लेने पर निश्चित लाभ होता है । ज्यादा-कब्ज रहने पर एक चम्मच त्रिफला चूर्ण एक गिलास पानी में भिगोदें, सुबह उसे उबालकर एक कप करलें उसे थोड़ा ठंडाकर पीले, सुबह-सुबह दो तीन दस्त लगेंगे कुछ दिन में बीमारी में बहुत लाभ होगा । नित्य प्रातः चार गिलास पानी तांबे के जग में भर कर रखा हुआ नित्य लेने से बहुत लाभ होगा ।

अम्लपित- आधी कच्ची आधी पक्की सोंफ मिश्री के साथ नित्य भोजन के बाद लेने से बहुत लाभ होता है । दूध की लस्सी मिश्री मिलाकर लेने से लाभ होता है। धनिये की पंजीरी, धनिया पीसा हुआ, घी, मिश्री का चूर्ण लेना बहुत लाभकारी है । मावे से बनी चीजें, ओटाया हुआ दूध, अधिक चाय, काफी बहुत हानिकारक हैं ।

एक गिलास देशी गाय के दूध में दो चम्मच देशी गाय का घी सुबह रात नित्य लेने पर अम्ल पित्त, अल्सर का रोग मिट जाता है।

पानी अधिक से अधिक पीना चाहिये, कुंजल क्रिया सप्ताह में एक बार दो बार करना लाभकारी है।

पीलिया (जोइण्डिस)- फुलाई हुई फिटकड़ी का चूर्ण, जरा सी मात्रा नित्य लेने से बहुत लाभ होता है। चूना मूंग के बराबर केले में रखकर खिलाने से सात दिन में लाभ होता है। नित्य प्रातः एक पान का पत्ता जरासा चूना कत्था व 4 बूँद आकड़े की दूध की डालकर सूर्योदय से पहले पाँच दिन लेने से पीलिये में निश्चित लाभ होता है।

मलेरिया- **वायरल** में ढ़ाई नीम के ताजा पत्ते व दो कालीमीर्च पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर लेने से तुरन्त लाभ होता है। **इकातरा** बुखार होने पर सादा नमक (आयोडिन युक्त नहीं) को तवे पर सेक कर लाल करलें, उसे शीशी में भर लें, बुखार आने से पूर्व आधा छोटा चम्मच नमक एक गिलास पानी में घोलकर पिलादे इकातरा बुखार हमेशा के लिये चला जायेगा।

पेट में कीड़े होने पर- एक आंकड़े का पीला हुआ पत्ता 250 ग्राम पानी में उबालकर ठंडा कर छानकर पीने पर दो तीन बार में सब कीड़े निकल जाते हैं। अजवायन कूटकर गुड़ में मिलाकर गोली बनाकर बच्चों को पानी से निगलवादें, कीड़े गुड़ खाने आयेंगे अजवायन खाकर मर जायेंगे।

साइटिका, गृध्रसी, रींगड़ बाय- में (1) पारिजात, हरशृंगार के एक तोला पत्ते 250 ग्राम पानी में मिलाकर उबालें एक कप रहने पर पीसी हुई- मिश्री मिलाकर सुबह सायं एक महिना लेने से यह रोग ठीक हो सकता है।

(2) आकड़े का दूध हाथ पैर की बीसों अंगुलियों के नाखून में अन्दर लगातार तीन दिन रात को लगाये, हाथ में कपड़ा बाँध दें ताकि आँख में न लगे कुछ समय में साइटिक रोग में लाभ होगा।

संग्रहणी- 12 हर शृंगार-पारिजात के पत्ते, 6 काली मिर्च पीसकर दही में मिलाकर 15 दिन नित्य सुबह सायं लेने से लाभ होता है।

पंचगव्य निर्माण विधि

मात्रा	देवता	धर्म सिन्धु	वशिष्ठ	गोतमीयंत्र	अन्य आचार्य
गोमूत्र	वरूण	8 ग्राम	16 ग्राम	50 ग्राम	160 ग्राम
गोबर रस	अग्नि	16 ग्राम	8 ग्राम	50 ग्राम	20 ग्राम
गोदूध	चन्द्र	12 ग्राम	32 ग्राम	50 ग्राम	80 ग्राम
गोदधि	वायु	10 ग्राम	64 ग्राम	50 ग्राम	40 ग्राम
गोधृत	सूर्य	8 ग्राम	64 ग्राम	50 ग्राम	10 ग्राम
कुश	ब्रह्मा				
जल	विष्णु				

ग्रन्थ-महानिर्वाणतन्त्र, कौलावती, आचोरन्दु

पंचामृत	निर्णय	अन्य
गोदुग्ध	20 ग्राम	320 ग्राम
गोदधि	20 ग्राम	160 ग्राम
गोधृत	20 ग्राम	20 ग्राम
मधु	20 ग्राम	40 ग्राम
शर्करा या गंगाजल	20 ग्राम	80 ग्राम



6

॥ॐ॥

संगठनात्मक संरचना

- प्रत्येक प्रान्त मे गो सेवा प्रमुख नियुक्त करवाना ।
- विभाग, जिला तालुका (तहसील) तक इस रचना को ले जाना ।
- शहरों, कस्बों में मातृशक्ति का अलग तंत्र निर्माण करना, जो बालिका विद्यालय, महाविद्यालयों में जाकर गो की आवश्यकता, महता समझा सके । परीक्षा आयोजित करवा सके ।
- परिवारों में गो ग्रास के लिए घर में दान पात्र रखवाना । माताओं को इस काम में लगाना, उनकी गट व्यवस्था बनाना ।
- **"सवामणि योजना" को प्रोत्साहन** - घरों में मंगल अवसर-जन्म दिन - विवाह की वर्षगांठ अन्य मांगलिक प्रसंगों पर परिवार की ओर से एक सवामणि देने के लिए प्रेरित करना । (40 किलो दलिया, 2 किलो तेल सरसों या तिल, 150 ग्राम मेथी, 100 ग्राम अजवायन, दलिये को दो किलो तेल में सेकना, फिर दो सो किलो पानी में पकाना, पकाते समय मेथी व अजवायन डाल देना पकने पर 9 किलो गुड़ डालकर ठंडा कर चारे में मिलाकर छोटी बड़ी 101 गायों को खिलाना, यह सवा इकावन किलो सामग्री हुई) 40 किलो का मण, 50 किलो का सवा मण शुभ के लिए सवा इकावन किलो सामग्री लेना जिसका मूल्य अधिक से अधिक 1500/- रु होता है । परिवार स्वयं यह सामग्री लावें व अपने परिवार सहित गौ पूजन करके गो माता को खिलावें ।

गर्मी में जौ या गेहूँ का दलिया, दीपावली से होली तक बाजरे का दलिया देना लाभकारी है । गुड़ भी सर्दी में लाभकारी है ।

"कामधेनु तुलादान"- स्वयं का बच्चे का जन्म दिन विवाह की वर्षगांठ अन्य मांगलिक प्रसंगों पर अपने या बच्चे के वजन का इच्छित सामान गोशाला में तुलकर दान करें। फिर वह सामान गोमाताओं को अपने हाथ से खिलायें। सपरिवार यह कार्यक्रम सम्पन्न करें, बहुत आनन्द आयेगा।



7

॥ॐ॥

गो पालन-गोसंवर्धन

गो आवास प्रकार 1. 20'

50 गाय 100'

8'		8'
2'	नाद	2'
2'	नाद	2'
6'		6'

गो आवास प्रकार 2. 30'

100' 50 गाय

8'		8'
नाद 2'		2'

सामान लाने, जाने के लिए रास्ता व गोदर्शन के लिए - 6'

नाद 2'		2'
6'		6'

गायों का आवास व्यवस्थित हो - पानी की पर्याप्त व्यवस्था हो। बड़ी गायों के लिए 40 से 50 वर्ग फुट, छोटी गायों के लिए 20 से 24 वर्ग फुट जगह छोड़नी चाहिये। नन्दी के लिये 60 वर्ग फुट जगह छोड़ी जाय।

ब्याभिन गायें	दूध वाली गायें व नंदी	9 महिने से 2 वर्ष तक बछड़ी	9 महिने से बड़े बछड़े	दूध पीते बछड़े बछड़ी	बूढ़ी गायें	दो वर्ष से बड़ी बछड़ी व नन्दी	अन्य नस्ल की गाये

गायों को खुला घूमने के लिए अलग-अलग कम से कम आठ बाड़े बनाने चाहिए जिनकी लम्बाई चौड़ाई 100 X 30 फुट हो (1) जिनमें दूध देने वाली गायों के लिए एक (2) बूढ़ी गायों के लिये एक (3) एक से 3 वर्ष तक बछड़ों के लिये एक (4) छोटी बछड़ियों के लिए एक (5) दूध पीने वाले बच्चों के लिए एक बाड़ा बनाना चाहिए। दो वर्ष से बड़ी बछड़ियों के लिए + साथ में साँड़।

गायों को चरने के लिये ले जाना संभव हो तो अवश्य ले जाना चाहिए।

●●●

8

॥ॐ॥

गायों की खुराक-रख-रखाव

300 किलों वजन की गाय को शरीर भार का एक प्रतिशत दाना, 2 प्रतिशत चारा, 4 प्रतिशत हरा चारा, 12 प्रतिशत पानी 50 ग्राम नमक व पानी में थोड़ा कली करने वाला चूना डाल देना चाहिये जिससे कैलशियम की पूर्ति हो सके । सप्ताह में एक बार सुबह नीम खिलाना चाहिये जिससे पेट में कृमि निर्माण न हो ।

- गायों को मच्छरों से व ठंड से बचाने के लिए गौशाला में एक कोने में गोबर के कण्डे जला देने चाहिये जहाँ से सारी गौशाला में धुँआ चला जाय ।
- गायों को दूध निकालने से पहले चारा खिला देना चाहिए ।
- दूध निकालने का समय सुबह सायं का निश्चित हो, दूध निकालने के समय मधुर वंशी की धुन लगा देनी चाहिए ।
- गाय का आवास खड़ी ईंटों से बनाना चाहिये, कठोर फर्श से अयन खराब हो जाते हैं ।
- दूध से हटने के बाद जो बछड़े नन्दी नहीं बन सकते उनकी नसबन्दी (बधियाकरण) करवा देनी चाहिए । बाद में बड़ा होने पर उन्हें कृषि कार्य व माल ढ़ोने के लिये प्रशिक्षित करना चाहिए ।
- दूध बढ़ाने के लिये शुरू के तीन महिनों तक दो थनों का दूध बछड़े-बछड़ी को पिलाना चाहिये, बाद में एक थन का दूध अन्त तक पिलाना चाहिए ।
- छोटे बच्चे को तीन माह तक रूई से 10 ग्राम नित्य तेल देना चाहिए ।
- नंदी को नित्य 50 ग्राम गुड़ तेल में भिगोकर देना चाहिए । उन्हें नित्य 50 ग्राम शतावरी देनी चाहिए । गायों को नित्य 30 ग्राम शतावरी देनी चाहिए इससे 15 दिन में एक लीटर दूध बढ़ जायेगा ।
- गाय पारिवारिक जीव है उसे प्यार चाहिए । उससे नित्य 10-15 मिनट बात करनी चाहिए, उस पर हाथ फेरना चाहिये ।

देशी गाय, विदेशी गाय का तुलनात्मक अध्ययन

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
1. विलक्षण गाय का चित्र	देशी गाय के ककूद, गलकम्बल, सींग 3 विशिष्ठ लक्षण है ।	तीनों लक्षण नहीं होते।
2. जठर (पेट)	देशी गाय के 4 जठर (पेट) होते है जो सामान्य विष का पाचन कर सकते है।	विदेशी गाय के 3 जठर (पेट) होते है।
3. गोबर	देशी गाय का गोबर बंधा हुआ छल्लेदार एवं चिपचिपा झिल्ली लिये होता है ।	इसका गोबर पतला होता है ।
4. गोबर के गुण	देशी गाय के गोबर से चर्म रोग निवारण की अद्भुत क्षमता होती है।	इसके गोबर से चर्म रोग बढ़ते हैं।
5. गौमूत्र	देशी गाय का गौमूत्र अमृत तुल्य सर्व रोग निवारक, सर्व विष शोषक, गंगा समान एक दिव्य तरल पदार्थ है।	इस के मूत्र में यह गुण नहीं होते हैं ।
6. स्वर्णाश	देशी गाय के ककूद में सूर्य केतु नाम की नाड़ी होती है जो सूर्य से स्वर्ण खींचकर दूध, गोबर, गोमूत्र को स्वर्ण युक्त बना देती है ।	ककूद (थूहा) नहीं होता अतः स्वर्ण का सवाल ही नहीं होता ।
7. दूध	देशी गाय का दूध पीला होता है। गुणों की खान होता है । अमृत तुल्य है ।	इस का दूध सफेद होता है। रोगों को जन्म देने वाला होता है। क्योंकि इसमें हुक वार्म होते है अतः जहर तुल्य है।
8. दही	सुपाच्य व अनेको रोगों का नाश करता है ।	इसमें वे गुण नहीं
9. तक्र (छाछ)	दही से भी ज्यादा लाभप्रद पेट के अनेक रोगों की दवा है।	इसमें भी वह क्षमता नहीं ।

गौमाता की चली हवा, लाख दुःखों की एक दवा । पंचगव्य है बड़ी दवा

देशी गाय, विदेशी गाय का तुलनात्मक अध्ययन

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
10. घी	देशी गाय का घी सुगंध युक्त, पीला सोने के समान रंगवाला जमने के बाद भी नरम होता है। हमारे शरीर के तापमान पर पिघल जाता है।	इस का घी सुंगध हीन, सफेदसा होता है। अपेक्षा कृत कड़ा होता है।
11. सुपाच्यता	देशी गाय का दूध दही, घी सुपाच्य होता है। नवजात शिशु से लेकर 100 वर्ष के बुजुर्ग व्यक्ति भी इसे आसानी से पचा सकते है।	इसका दूध, दही, घी रोग युक्त गुणहीन होने के कारण सुपाच्य नहीं है।
12. नस्यक्रिया	देशी गाय के शुद्ध घृत की नस्यक्रिया से सभी रोग नष्ट हो जाते है।	नुकसानदायी हो सकती है।
13. पोष्टिकता	देशी गाय के दूध, दही, घी में अद्‌भुत पोष्टिकता होती है।	इसके दूध में उतनी पोष्टिकता नहीं होती है।
14. पूर्णता	देशी गाय का दूध एक सम्पूर्ण आहार है । इसमें काबोहाइड्रेट खनीज आदि सभी आवश्यक तत्व है ।	देखने में एक जैसा होते हुए भी गुण हीन है।
15. रोग प्रतिरोधक क्षमता	देशी गाय जल्द बीमार नहीं होती । बीमार गाय जल्द स्वस्थ हो जाती है।	जल्द रोगी होती है, जल्द मर जाती है ।
16. आहार	कम खाती है ।	ज्यादा खाती है।
17. बछड़ा-बछड़ी	देशी गाय का बछड़ा जन्म लेने के साथ खड़ा हो जाता है । 1 घण्टे में दौड़ने लगता है।	विदेशी गाय का बछड़ा इतनी जल्दी अपने पाव पर खड़ा नहीं होता । न ही इतना चपल होता है।

टी.वी., कैंसर, शुगर, लकवा, घर की न बने कहानी ।
पीते रहिए मिला-मिलाकर, रोज गोमूत्र ओर पानी ।।

देशी गाय, विदेशी गाय का तुलनात्मक अध्ययन

विवरण	देशी गाय	विदेशी गाय
18. रूपा	देशी गोवंश लक्ष्मी रूप है। सभी देवी-देवताओं का वास है। प्रसन्न होने पर सब कुछ दे सकती है। आँखों में करूणा + प्यार है।	देखने में सुन्दर नहीं कुरूप है।
19. रख-रखाव	नहीं के बराबर कुछ नहीं चाहिए, छाह भी नहीं ।	बहुत ज्यादा एसी (AC) एवं कूलर चाहिए ।
20. धूप सहनशीलता	सूर्य रूपी है अतः 8/10 घण्टे धूप में सुख पूर्वक रह सकती है । कड़ी से कड़ी धूप में कष्ट नहीं होता ।	जरा भी गर्मी पड़ने पर हाँफने लगती है। ज्यादा गरमी पड़ने पर मर भी सकती है।
21. वर्तमान स्थिति	संख्या तेजी से घट रही है। कृत्रिम गर्भाधान के प्रचलन से नस्ल बिगड़ रही है।	अधिक लालच में शहर के ग्वाले यहाँ तक अनेक गोशाला वाले भी इस गाय जैसे पशु की संख्या बढ़ा रहे है।
22. रोग प्रतिकारण शक्ति, पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर सीमित खर्च के कारण बीमारी की समस्या बहुत गंभीर नहीं होती । मृत्यु संख्या कम और बछड़े बढ़ कर उत्कृष्ट बैल बनते है।		22. पशु चिकित्सा व टीकाकरण पर खर्च अधिक और रोग के कारण मृत्युसंख्या ज्यादा जबकी बछड़ों का खेती के लिये उपयोग नहीं होता है।
23. प्रजनन क्षमता	प्रजनन से 12 से 15 बार तक क्षमता	5-6 बार तक
24. दूध क्षमता	अच्छे नन्दी जिसकी माँ अधिक दूध वाली रही हो से बीजदान करवाने, अच्छे खान-पान से इसकी भी कई नस्ले-गिर कांकरेज, राठी, थरपारकर, हरियाणा, साहीवाल, मालवी 15 से 20 लीटर दूध प्रतिदिन दे सकती है ।	

गौमूत्र, गौमय, दूध, दही सभी औषधिया पदार्थ है।

||ॐ||

गौ शाला परिसर में लगाये जाने वाले बड़े पेड़

1.	नीम	22.	कचनार	43.	गुग्गल
2.	पीपल	23.	तेज पत्र	44.	पारस पीपल
3.	वट्-बरगद	24.	दाल चीनी	45.	शिवलिंगी (बेल)
4.	शीशम	25.	लिसोड़ा	46.	सहजना
5.	शमी (खेजड़ी)	26.	गून्दी	47.	आम
6.	कीकर (देशी बबूल)	27.	जाल	48.	ईमली
7.	सिरस	28.	मीठा नीम	49.	खेर
8.	चरेल	29.	बकायन	50.	चीकू
9.	करंज	30.	जंगल जलेबी	51.	सुपारी
10.	बेर-पेमली बेर	31.	गूलर	52.	नारियल
11.	जामुन	32.	सागवान	53.	कटहल
12.	अर्जुन	33.	साल	54.	लीची
13.	बेल	34.	पाकुड़	55.	अमरूद
14.	आंवला	35.	बांस	56.	अनार
15.	बहेड़ा	36.	सेमल	57.	काजू
16.	अशोक	37.	सफेदा (नीलगिरि)	58.	इन्द्र रूख
17.	पारिजात	38.	ताड़	59.	खजूर
18.	रोहिड़ा	39.	बादाम	60.	अमलतास
19.	पलास (ढ़ाक)	40.	महुआ	61.	तेन्दुपत्ता
20.	धोकड़ा	41.	सफेद चंदन	62.	चीड़
21.	रीठा	42.	लाल चंदन		

गौ शाला परिसर में लगाये जाने वाले फूलदार पौधे

1.	चम्पा	7.	मधु मालती	13.	सफेद कनेर
2.	चमेली	8.	मधु कामिनी	14.	पीली कनेर
3.	गुलाब	9.	रात की रानी	15.	गुलदाऊदी
4.	कमल	10.	चांदनी	16.	जूही
5.	मोगरा	11.	गेंदा, हजारा	17.	जवा कुसुम
6.	सदाबहार	12.	लाल कनेर	18.	शिकाकाई

॥ॐ॥

गौ शाला परिसर में लगाये जाने वाले औषधीय पोधे

1.	अपराजिता	29.	सन्तरा (नारंगी)	57.	गिलोय
2.	अकरकरा	30.	मौसमी	58.	रतनजोत
3.	पिप्पली	31.	माल्टा	59.	कालमेघ
4.	ब्राह्मी	32.	करून्दा	60.	सर्पगंधा
5.	लोध्र	33.	आक	61.	सफेद मूसली
6.	निशिंदा	34.	धतूरा	62.	सनाय
7.	अश्व गंधा	35.	सीताफल	63.	भृंगराज
8.	अनन्त मूल	36.	केर	64.	महाभृंगराज
9.	तुलसी	37.	फोग	65.	गुड़मार
10.	हरितकी	38.	खींप	66.	वनप्याज
11.	चाय	39.	काली मिर्च	67.	अंजीर
12.	काफी	40.	छोटी इलायची	68.	खरेटी
13.	अदरख	41.	बड़ी इलायची	69.	बावची
14.	पोदीना	42.	लोंग	70.	वासा
15.	हल्दी	43.	बड़ी हरितकी	71.	जावत्री
16.	मिरची	44.	डांसर	72.	जायफल
17.	धनिया	45.	मुलेठी	73.	कायफल
18.	जीरा	46.	कमरख	74.	अफीम
19.	अजवायन	47.	जवा कुसुम	75.	गाजर
20.	सरसों	48.	शहतूत	76.	मूली
21.	राई	49.	फालसा	77.	बन्द गोभी
22.	मेथी	50.	मैदा लकड़ी	78.	भूई आवला
23.	लाजवन्ती	51.	घृत कुमारी	79.	बला
24.	शतावरी	52.	इन्द्रायण	80.	अतिबला
25.	शंख पुष्पी	53.	पत्थर चूर	81.	सिन्दूर
26.	नीम्बू	54.	मेंहदी	82.	जमालघोटा
27.	पपीता	55.	अपामार्ग		
28.	केला	56.	पुनर्नवा		

●●●

क्र.सं.	मास	नक्षत्र	पाश्चात्य मास
1.	चैत्र	चित्रा	मार्च-अप्रैल
2.	वैशाख	विशाखा	अप्रेल-मई
3.	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा	मई-जून
4.	आषाढ़	पूर्वाषाढ़	जून-जुलाई
5.	श्रावण	श्रावणी	जुलाई-अगस्त
6.	भाद्र	पूर्व भाद्र पद	अगस्त-सितम्बर
7.	अश्विन	अश्विनी	सितम्बर-अक्टूबर
8.	कार्तिक	कृतिका	अक्टूबर-नवम्बर
9.	मार्गशीर्ष	मृगशीर्ष	नवम्बर-दिसम्बर
10.	पौष	पुष्य	दिसम्बर-जनवरी
11.	माघ	मघा	जनवरी-फरवरी
12.	फाल्गुन	उत्तरा फाल्गुनी	फरवरी-मार्च

पंचवटी

बरगद
आंवला
बिल्व पत्र
पीपल
अशोक

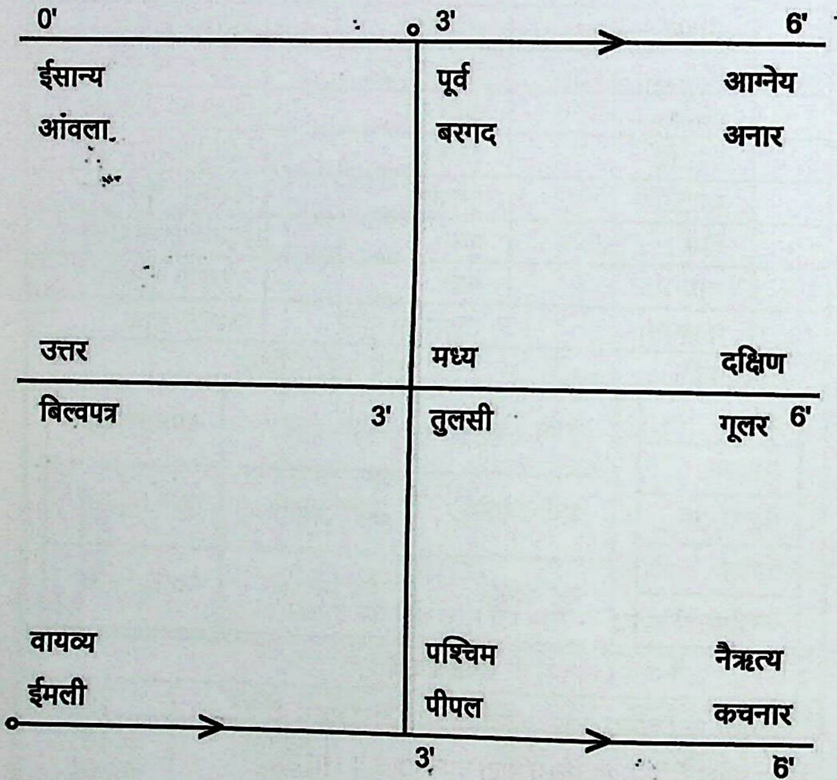
नव गृहं-वाटिका

कुशा (केतु)	पीपल (गुरु)	अपामार्ग (बुध)
शमी (शनि)	मदार (रवि)	गूलर (शुक्र)
दूब (राहु)	खेर (मंगल)	पलास (सोम)

नक्षत्र वाटिका

क्र.सं.	नक्षत्र	वृक्ष	क्र.सं.	नक्षत्र	वृक्ष
1.	स्वाति	अर्जुन	14.	अश्वनी	कुचिला
2.	विशाखा	कटाई	15.	भरणी	आंवला
3.	अनुराधा	मौलश्री	16.	कृतिका	गूलर
4.	ज्येष्ठा	चीढ़	17.	रोहिणी	जामुन
5.	मूल	साल	18.	मृगशिरा	खैर
6.	पूर्व आषाढ़ा	अशोक	19.	आद्रा	शीशम
7.	उत्तर आषाढ़ा	कटहल	20.	पुनर्वसु	बांस
8.	श्रवण	मदार	21.	पुष्य	पीपल
9.	धनिष्ठा	शमि	22.	आश्लेषा	नागकेसर
10.	शत विषक	कदम्ब	23.	मघा	बरगद
11.	पूर्व भाद्र पद	आम	24.	पूर्व फाल्गुनी	पलास
12.	उत्तर भाद्र पद	नीम	25.	उत्तर फाल्गुनी	पाकड़
13.	रेवती	महुवा	26.	हस्त	रीठा
			27.	चित्रा	बेल

वास्तुदोष निवारक वृक्ष मंडल



इन सबको ईसान कोण में गमलों में लगायें व ऊपर से काटते रहें ताकि इनकी छाया मकान पर न पड़े ।

9

॥ॐ॥

गो आधारित कृषि

- **भिन्न-भिन्न प्रकार के खाद**
- अमृत पानी
- घन जीवामृत
- केचुआ खाद
- नैडेप खाद
- गोबर गैस स्लरी

- **कीट नियंत्रक**
- गोमूत्र से
- नीम की निम्बोली से
- छाछ से
- दूध से
- पंचगव्य से
- आक, नीम, धतूरा, करंज, सीताफल, नीला थोथा
- लाल मिर्च, हींग द्वारा

- आच्छादन
- अमृतपानी

"समाधि खाद" - गाय की मृत्यु होने पर उसका चमड़ा उतारने के लिए किसी को न दें। उसे अपने खेत में ही समाधि दे दें।

पांच फुट लम्बा, चार फुट चौड़ा, चार फुट गहरा गड्ढा खोदें, उसमें 4 इंच गीला गोबर बिछा दें फिर 20 किलो मोटा नमक डाल दें। गो माता को गढ़े में सुला दें, ऊपर से 30 किलो मोटा नमक डाल दें, फिर एक फुट तक गीला गोबर बिछा दें, फिर मिट्टी डालकर गड्ढा बन्द कर दें उसमें पानी नहीं जाना चाहिये, शरीर गलना चाहिये, सड़ना नहीं, साल भर बाद उस गड्ढे को खोद कर खाद निकाल लें सुगन्धित खाद निकलेगा, सब कुछ गल चुका होगा, कुछ हड्डियाँ व सींग बचेंगे उन्हें अलग कर लें।

बाद में यह खाद वर्षा होने पर या खेत में पानी देकर एक एकड़ में बखेर दें यह खाद बंजर भूमि को भी उपजाऊ बना देगा, फलदार वृक्षों में डालने पर बहुत अधिक फल प्राप्त होंगे। दस साल तक इसका प्रभाव रहेगा।

"सींग खाद प्रकार"-1 - आवश्यक सामग्री - मृत गाय के सींग की खोल व स्वस्थ दुधारू गाय का गोबर । **समय**- शरद् पूर्णिमा से चैत्र पूर्णिमा तक **विधि**- शरद् पूर्णिमा के दिन दूध देने वाली गाय का गोबर मृत गाय के खाली सींग में भरकर 1½ फुट- 18 इंच गहरा गड्ढा खोद कर मोटा सिरा नीचे रखते हुए जमीन में गाड़ दे, नुकीला सिरा दो इंच हवा में खुला रखें, पके हुये गोबर खाद व मिट्टी से गड्ढा भर दें नमी बनायें रखें, चैत्र पूर्णिमा को खोद कर निकाल लें, ऐसे कई सींग एक साथ गाड़ सकते हैं ।

भण्डारण - इस खाद को किसी मिट्टी के घड़े में ठंड़ी जगह में रखें, नमी बनाये रखें ।

उपयोग विधि- 13 लीटर पानी में 30 ग्राम सींग खाद मिलाकर सीधा व उलटा भंवर बनायें तथा पुरानी खजूर की झाडूँ, नीम के पत्तों से झाडूँ बनाकर एक एकड़ में बोनी की पूर्व संध्या पर छिड़के, दूसरी बार चार पत्ते होने पर छिड़के ।

लाभ- इससे जड़े गहरी जायेंगी, भूमि की नमी बनी रहेगी, जमीन भुर भुरी होगी, इससे ह्यूमस, सूक्ष्म जीवाणु, केचुओं की वृद्धि होगी ।

"सींग खाद प्रकार' -2 (सिलिका खाद)- आवश्यक सामग्री- चकमक पत्थर का बहुत महीन चूर्ण, मृत गाय के सींग की खोल ।

समय- चैत्र पूर्णिमा से आश्विन (कुंवार) की नवरात्रि तक ।

विधि- सिलिका चूर्ण को रोटी के आटे की तरह गूंदकर सींग के खोल में भरकर रखें कुछ समय बाद अतिरिक्त पानी ऊपर आजायेगा उसे निकाल दें खाली जगह में और सिलिका चूर्ण भर दें । फिर जमीन में पहले प्रयोग की भांति गाड़ दें । फिर पका हुआ गोबर खाद व मिट्टी से गड्ढा भर दें । आश्विन नवरात्रा में निकालें ।

भण्डारण- इस खाद को किसी मिट्टी के घड़े में ठंडी जगह में रखें, नमी बनाये रखें । इससे चार साल में 2400 ग्राम खाद मिलेगा वह 1200 एकड़ में काम आयेगा।

उपयोग विधि- 13 लीटर पानी में 1 ग्राम सिलिका का चूर्ण मिलाकर एक घण्टे सीधा तथा उल्टा भंवर बनायें । चार पत्ते की फसल पर नोजल का मुँह उपर कर महीन फुंआर के रूप में सूर्योदय के समय उड़ाये, दूसरी बार छिड़काव फलों के विकास के समय करें । सींग व सिलिका खाद क्रमसह चार साल तक बनेंगे। खरीफ की फसल में सींग खाद व रवि (सर्दी) की फसल में सिलिका खाद का प्रयोग करें।

लाभ- प्रकाश संश्लेषण में वृद्धि से पौधा स्वस्थ एवं मजबूत, फफूंद, कीट, व्याधियों से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होगी।

गौ - आधारित कृषि

कीट नियंत्रक -

(1) **गोमूत्र -** बहुत अच्छा कीट नियंत्रक है। गो मूत्र, गाय, बैल, नन्दी किसी का भी हो सकता है, कितना भी पुराना हो उपयोगी है। 1 लीटर गो मूत्र में 10 लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिए, कीड़ा लगने की सम्भावना से पहले ही छिड़काव करें। हर 15 दिनों में एक बार करें लाभकारी रहेगा।

(2) **तक्र-छाछ-मठ्ठा-** 10 से 40 दिन पुराना किसी बर्तन में मुँह बाँधकर रखदें बाद में 10 गुना पानी मिलाकर छिड़काव करें उपयोगी रहेगा।

(3) **दूध -** एक लीटर देशी गाय के दूध में 16 लीटर पानी मिलाकर मिर्च की फसल पर छिड़काव करने पर कीड़े नहीं लगते।

(4) **नीम की निम्बोली-बीज-** एक किलोकूटकर 20 किलो पानी में अच्छी तरह उबालें-ठंडाकर छानकर बाद में पौधों पर छिड़काव करें, विशेष कर सब्जी वाले पौधों पर इससे पौधों के पत्ते, फल कड़वे हो जायेंगे कीड़ा खा नहीं सकेगा, नीचे गिर जायेगा उस समय बारीक अनाज खेत मे बखेर दें, चिड़िया उस अनाज को खाने आयेगी कीड़ों को भी ले जायेंगी नीम की निम्बोली न मिलने पर पत्ते पीस कर उसका भी उपयोग कर सकते हैं।

प्रभावी कीट नियंत्रक - 2 किलो आक के पत्ते, 2 किलो नीम के पत्ते, 1 किलो धतूरे के पत्ते, 1 किलो करंज या सीता फल के पत्ते, आधा किलो लहसुन छिलके सहित, 100 ग्राम नीला थोथा-मैलतूतू (कोपर सल्फेट $CuSO_4$) 100 ग्राम लाल मिर्च डंठल सहित, 10 ग्राम शुद्ध हींग इन सबको कूटकर 20 किलो पानी में उबालें दस किलो रहने पर ठंडा कर छानकर 10 किलो गोमूत्र किसी भी गोधन का हो, चाहे नाली से इकठ्ठा किया हो मिलादें, फिर उसे धातु या मिट्टी के ड्रम में भरकर मुँह बन्द कर गोबर के ढ़ेर में 15 दिन तक दबादें फिर निकालकर एक एक लीटर के पात्र में भर दें।

उपयोग- एक लीटर में 100 लीटर पानी मिलाकर पौधों पर छिड़काव करें कोई भी कीड़ा नहीं लगेगा, बीज पर हल्का छिड़काव कर बोने पर बीज में कीड़ा नहीं लगेगा, सब्जी की फसल पर एक लीटर में 200 लीटर पानी मिलाकर छिड़काव करें क्योंकि उसके पत्ते कोमल होते हैं। घर में आधी बाल्टी में दो ढक्कन मिलाकर पौंछा लगाने पर घर में कीड़े नहीं आते। पेस्टी साइड नहीं डालने पड़ेंगे।

अमृतपानी - 16 लीटर गोमूत्र, 16 लीटर पानी, 16 किलो देशी गाय का गोबर 320 ग्राम गुड़, 160 ग्राम तालाब की माटी मिलाकर प्लास्टिक के ड्रम में भर दें, मुँह बन्द कर दें, 4 से 8 दिन में इसका उपयोग 160 किलो पानी मिलाकर करें, हर 15 दिन में ऐसा करें बहुत लाभ होगा। इससे 6.5 लाख केचुवे सक्रिय होंगे। प्रतिदिन एक केचुआ 20 छेद करेगा।

"घन जीवा मृत"- 10 किलो गोबर (गाय का) 5 किलो गोमूत्र-1 किलो गुड़, 1 किलो किसी भी दाल का आटा, 1 किलो तालाब की माटी मिलाकर कण्डे बनाकर छाया में सुखा दें, फिर कूटकर रखलें चार महिने तक काम में आ सकता है। यह सारी सामग्री एक एकड़ भूमि में छिड़कने के लिये पर्याप्त है।

"आच्छादन" - पौधों से गिरने वाले पत्तों को उन्हीं की जड़ों में डाल देना चाहिए उस पर मेड़ की मिट्टी डाल देनी चाहिए वह बहुत अच्छा भोजन है। खरपतवार को भी बाहर फेंकना नहीं चाहिए खेत में डाल दें इससे पौधों में नमी बनी रहती है, देशी केचुओं को पनपने व पौधों के लिए भोजन बनाने की सुविधा रहती है।

"प्राकृतिक उत्तम खाद"- भूमि को चार इंच खोदकर उस पर 60 किलो ताजा गोबर 100 किलो पानी, 2 किलो गुड़ एक किलो तालाब की मिट्टी का घोल बनाकर थोड़ा छिड़क दें बाद में 8" तक पुराना गोबर उस 10' × 5' आकार के भूमि पर बिछादें फिर थोड़ा घोल डाल दें, फिर 4" बेकार पत्ते, चारा उस पर डाल दें फिर थोड़ा घोल छिड़क दें ऐसी 2 परत एक-एक फुट की बना दें फिर उसे काले पोलीथिन से ढ़क दें। 15-30-45 दिन बाद इसे पलट कर हर बार उतना ही घोल बनाकर डाल दें, 60 दिन में बहुत उत्तम देशी केचुआ खाद तैयार हो जायेगा। यह 3 रु. किलो से 5 रु. किलो के भाव से बेची जा सकती है।

॥ॐ॥

एक एकड़ जमीन में दो गायों से 50 हजार से एक लाख रुपया तक हर महिने कमाइयें

40 x 100 = 4000 वर्ग मीटर = एक एकड़ 100 मीटर = 333.3 फिट

तरीका -

सवा फुट चौड़ी x 1 फुट गहरी नाली खोदना।
क्यारी तीन फिट चौड़ी-
एक मीटर में 5 बड़े पौधे नाली से
9-9 इंच दूरी पर एक पौधा-बीच में एक पौधा
नाली में घास-पत्तों का आच्छादन पानी सायं को देना
एक मीटर में 5 x 40 = 200 एक क्यारी में 200 पौधे

नाली 1¼' x 1' गहरी

क्यारी

नाली 1¼' x 1' गहरी

कुल क्यारी 76 x 3 = 228 फुट | 76 क्यारियों में
कुल नाली 76 x 5/4 = 95 फुट | 15200 बड़े पौधे
323 फुट

क्यारी में 30-30 फुट पर बांस गाड़े 2-4-6 फुट पर तार बाँधे । पौधे को सूतली के सहारे खड़ा करें- तारों से बांधे पूरा प्रकाश व हवा मिलेगी । अधिक दिन, अधिक पैदावार मिलेगी।

साल में अगर दो फसल ली । एक फसल 180 दिन 80 दिन पौधे तैयार होने व साफ सफाई में 100 दिन फसल मिली- एक पौधे से एक दिन में औसत 100 ग्राम 100 दिन 10 किलो फसल मिलेगी। 15000 पौधों से 1½ लाख किलो फसल मिलेगी। आड़त पर व्यापारी को नहीं बेचना। खुला बेचना 10 रु. किलो बेची । एक फसल में 1.5 लाख किलो x 10 रु. 15 लाख तथा दूसरी फसल में 15 लाख रुपये मिलेंगे। मौसम खराब होने पर नुकसान हुआ तो भी पर्याप्त लाभ होगा। 500-600 लोगों को जहर खाने से बचायेंगे।

इसमें अमृत पानी, कीट नियंत्रक व प्राकृतिक खाद का प्रयोग करें। पुस्तक में अन्यत्र देखें।

गौ-आधारित कृषि के कुछ अच्छे उदाहरण

आन्ध्र-रंगा रेड्डी- जिले के किसान **नाग रत्नम् नायडु** शुद्ध जैविक खेती करते हैं। वे चावल पैदा करते हैं, उनके पास कुल 11 एकड़ जमीन है। जिसमें एक एकड़ में केवल एक किलो 450 ग्राम बीज लेते हैं एक-एक पौध रोपते हैं। उनमें से एक एकड़ में 65 क्वींटल धान पैदा करते हैं।

कर्नाटक- कृषि प्रयोग परिवार- **अरुण** और **आनन्द** दो मित्रों ने मिलकर तीर्थ हल्ली व सागर के पास एक गांव में जैविक खेती का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। कई लाख किसानों को जैविक खेती के लिए तैयार किया है। वे प्रशिक्षण भी देते हैं।

महाराष्ट्र- बिटा ग्राम सांगली जिले के **बाबा बर्वे** ने जैविक खेती का थोड़ी जमीन में आदर्श प्रस्तुत किया है। कोल्हापुर के **शेखर धर्माधिकारी** का भी जैविक कृषि के क्षेत्र में बड़ा नाम है।

सतारा- जिले के **दड़वड़ी** ग्राम के **अशोक इंगवले** 125 से अधिक खिलार गायें पालते हैं दूध नहीं बेचते अच्छे बैल तैयार करते हैं, उनकी बैल जोड़िया 40 हजार से 4 लाख में बिकती है। वे जैविक खेती ही करते हैं, अनार का अच्छा बगीचा है, गत बार उन्होंने ग्रीन हाउस (हरित गृह) में 5 एकड़ में 500 टन शिमला मिर्च पैदा की जो 20 रु. किलो के भाव से एक करोड़ रु. की बिकी।

गुजरात में **सूरत** के पास के **दामजी भाई पटेल** 200 से अधिक देशी गायों को अच्छे ढंग से पालते हैं, उनका गो मूत्र- केले की खेती करने वाले किसानों को 10 रु. लीटर बेचते हैं। उनका देशी गाय का दूध 45 रु. लीटर बिकता है।

अहमदाबाद के पास **पिराना** गाँव के युवा कृषक **गोपाल भाई** की गोशाला देखने लायक है- उनके यहाँ 30 लीटर से अधिक दूध देने वाली गिर गायें हैं। उनका दूध 70 रु. लीटर तक बिकता है।

गुजरात में ही **कच्छ** क्षेत्र के **मनोज भाई सोलंकी** जैविक कृषि में एक बड़ा नाम है।

अमरेली जिले के किसान संघ के कार्यकर्त्ता भी इस क्षेत्र में बड़ा काम कर रहे हैं।

राजस्थान में सीकर जिले के **ओमप्रकाश जी शर्मा** कोटपूतली के पास पावटा के **किशन जी गूर्जर**, बांदीकुई के पास के **रामजीलाल जी शर्मा**, गंगानगर

सादुलशहर तहसील **कृष्ण कुमार जाखड़** ये सब भी जैविक कृषि के देखने योग्य उदाहरण है । **उत्तर प्रदेश में-** मुज्जफर नगर के पास थाना भवन के **श्री धर्मपाल सिंह** ने गन्ने के क्षेत्र में आदर्श काम किया है वे 9-9 फूट की दूरी पर गन्ना बोते हैं । एक-एक आंख लगाते हैं, उसमें से 100-100 फूट निकलती हैं । वे 1 फुट की दूरी से पानी देते हैं उनका मानना है कि पौधों को पानी नहीं नमी चाहिये । उनका एक-एक गन्ना 3½ से 4 किलों का होता है । वे 700 से 1000 क्विंटल तक गन्ना एक एकड़ से लेते हैं ।

छतीसगढ़- रायपुर दुर्ग के पास फुण्डा ग्राम में **श्रीशभाई, राजू भाई गुजराती** का 100 एकड़ का फार्म है । वे शुद्ध जैविक खेती करते हैं । नित्य कई टन सब्जी पैदा करते हैं । उनके पास 300 से अधिक देशी गायें है । उनमें वृद्ध गायों के नीचे गद्दे लगा रखे हैं एक-एक गद्दे की कीमत 8-8 हजार रुपये है । वे गोमूत्र से कीट नियंत्रक तैयार करते हैं, सब प्रकार के सब्जियों के लिए अलग-अलग और 800 रु. लीटर तक में बेचते हैं । उनके 3 करोड़ रु. की लागत की कीट परिक्षण की आधुनिकतम प्रयोगशाला है । वे 45 अश्वशक्ति का बिजली उत्पादक यंत्र पूर्ण गोबर गैस से चलाते हैं ।

'अच्छी गो माता के लक्षण'

मत्स्य भगवान ने मनुमहाराज को कहा - गाय सुशील व सीधी हो, उसका कोई अंग विकृत न हो, वह दुर्बल न हो, तथा उसे कोई रोग न हो । उसका बछड़ा, बछड़ी जिन्दा हो, चमड़ी खुर और सींग चिकने हो, देखने में सुन्दर व सौम्य हो, आकार सामान्य हो, स्वभाव शान्त हो, उसके पीछे का भाग चौड़ा हो, ओठ कोमल, सटे हुए तथा लाल रंग के हों तथा गर्दन भी लाल रंग की हो जीभ काली न हो, किन्तु लम्बी चिकनी एवं लाली लिये हुए हो, नेत्र स्वच्छ हो सुन्दर हो खुर सटे हुए और मजबूत हो, नेत्र रंग में मधु के समान लाल व चिकने हो, उनकी पुतली भी लाल रंग की हो, आँसू न बहते हों, दाँत सात या चौदह हो, तालू श्याम रंग का हो तथा दोनों पार्श्व व रान सुन्दर हो, छाती, पीठ, मस्तक, दोनों ओर का पेट तथा कूल्हे ये छः अंग ऊँचे उभरे हुए हो, दोनों कान दोनों नेत्र तथा ललाट ये पाँच अंग समान एवं चौड़े हो तथा पूँछ, गलकम्बल, दोनों रान मस्तक, गर्दन तथा चार थन ये दस स्थान लम्बे हो । . सब लक्षण जिस गो में हो उसे सुलक्षणा गो समझना चाहिये ।

'सुन्दर नन्दी (वृषभ) कैसा हो' - सांड के कन्धे ऊँचे पूँछ एवं ललरी सीधी, कटिप्रदेश एवं कन्धे चौड़े, सींगों की नोक चिकनी, पूँछ लम्बी एवं मोटी तथा आँखे मल्लिका कुसुम के समान हों दाँत तीखे तथा संख्या में नौ या अठारह हों, ऐसे ऽः बछड़े को नन्दी बनाना चाहिए, जिसके कान बड़े, रोयें चिकने और आँखे लाल हों, रंग पीला पेट सफेद और बगले काली हों जिसके सींग भौहों की ओर मुड़े हुए तथा लम्बे हों ऐसा साण्ड सभी वर्णों के लिए उपयोगी है। जिसके चारों पैर बिल्ली के रंग के हों, शेष अंग, कपिला अथवा सफेद रंग के हों और नेत्र मणियों के समान चमकीले हों ऐसा नन्दी प्रशंसनीय है। जिसका रंग पीला अथवा तीतर के समान हो।

तथा जिसके चारों पैर अथवा दो पैर सफेद रंग के हों उसे **'कास्ट'** जाति का नन्दी कहा जाता है। जिसका मुँह कानों तक सफेद हो और शेष रंग लाल हो उसे **'नन्दी मुख'** कहते हैं। जिसका पेट एंव पीठ सफेद रंग की हो और शेष रंग लाल हो उसे **'समुद्र'** की संज्ञा दी है, ऐसे सांड के रखने से वंश वृद्धि होती है। जिसका रंग चित्त कबरा हो उसे **'धन्य'** कहा गया है। जिसके शरीर पर कमल की आकृति के धब्बे हो उसे 'भाग्य वर्द्धक' माना गया है।

जिस सांड की टांग, मुँह और पूँछ सफेद रंग के हों शेष शरीर लाख के रंग का हो, जिसका आगे का भाग उभरा हुआ हो और पूँछ पृथ्वी तक लटकती हुई तथा मोटी हो वह 'नीलवृष' श्रेष्ठ माना गया है। (वायुपुराण- गो अंक से)

'अच्छा बैल कैसा हो'

जिन बैलों के ओठ कोमल, सटे हुए और तांबे के समान लाल रंग के हों, जिसके कान पतले, छोटे और ऊँचे होते हैं, जिनका पेट सुन्दर और पिंडलिया उभरी हुई होती हैं, खुर कुछ लाल और मिले हुए, छाती चौड़ी तथा डील (चूहा) ऊँचा होता है, चमड़ी चिकनी रोएं सुन्दर और छोटे होते हैं, तथा सींग लाल और पतले होते हैं, जिनकी पूँछ पतली और लम्बी होती है, आँखों के कोये लाल होते हैं तथा जो चलते समय जोर-जोर से साँस लेते हैं, जिनके कन्धे सिंह के से और गलकम्बल पतली और छोटी होती है उस जाति के बैलों को **सुगत** कहते हैं, वे पूजनीय होते हैं।

जिनके बायें भाग में बायीं ओर घूमने वाला चक्र हो और दाहिने भाग में दक्षिणावृत्त तथा शरीर पर हरिण की सी धारियाँ हो, नेत्र और शरीर स्थूल हो और खुर फैले हुए न हो वे सभी बैल प्रशस्त एवं भार ढ़ोने में समर्थ होते हैं। जिसके थूथन में बल पड़े हो, दक्षिण भाग सफेद रंग बाकी शरीर, त्कमल, कुमुद अथवा लाख के रंग का हो, जिसकी पूँछ सुन्दर और चाल घोड़े के समान तेज हो, जिसके अण्डकोष लम्बे, पेट मेंढ़े के समान और कमर तथा छाती पतली हो, उस बैल को भार ढ़ोने तथा लम्बी यात्रा करने में समर्थ और वेग में घोड़े समान जानना चाहिए। जिसका रंग सफेद, आँखे पीली अथवा लाल, सींग ताम्बे के रंग के और मुख बड़ा हो, वह **'हंस'** जाति का बैल शुभदायक एवं अपने झुण्ड को बढ़ाने वाला कहा जाता है।

जिसकी पूँछ जमीन तक लटकी हुई हो, जिसकी कमर तांबे के रंग की हो और नेत्र लाल हो, जिसका डील ऊँचा हो और रंग चित्र कबरा हो ऐसा बैल अपने स्वामी को शीघ्र ही लक्ष्मीवान बना देता है अथवा जिसका एक पैर सफेद हो और बाकी शरीर चाहे जिस रंग का हो वह बैल भी शुभ फल दायक होता है।

गो ऊर्जा :-

- बैल चालित कृषि यंत्र
- बैल चालित कृषि पम्प
- गोबर गैस से बिजली
- गोबर गैस से- मिथेन कार्बन-डाई-आक्साइड (CO_2) अलग कर वाहन चलाना
- गोबर गैस से छोटे जनरेटर

पंचगव्य उत्पाद

दवा हेतु गोमूत्र अर्क, घनवटी, पंचगव्य घृत, हरड़ेचूर्ण, मंजन, शैम्पो,फेसपैक, केश निखार साबुन, फिनाइल, मच्छर भगाने का तेल, बर्तन निखार आदि।

1. केश निखार चूर्ण :-

100 ग्राम आंवला चूर्ण

100 ग्राम शिकाकाई चूर्ण

100 ग्राम रीठा चूर्ण (गुठली निकालकर)

100 ग्राम मुलतानी मिट्टी

100 ग्राम गोमय चूर्ण

100 ग्राम नीम तेल

50 ग्राम मेहन्दी पत्ता चूर्ण

100 ग्राम भृंगराज चूर्ण

10 ग्राम कपूर

इन सबको पीसकर 10-10 ग्राम के पाउच (थैली) बनाना-फिर कच्चे दूध या छाछ या पानी में मिलाकर घोल बनाकर माथे में लगाना आधा घंटा रखना, फिर स्नान कर लेना। सप्ताह में दो या तीन बार लगाना - रासायनिक साबुन का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना।

लाभ- इसको लगाने से मस्तिष्क ठंडा रहेगा। रूसी दूर होगी, बाल झड़ने बन्द होंगे, बाल काले रहेंगे। नये बाल आ सकते हैं। बाल कृत्रिम काले करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

2. मच्छर भगाने का तेल -

500 ग्राम गोमूत्र अर्क

100 ग्राम पाईन (चीढ़) का तेल

100 ग्राम सरसों का तेल

100 ग्राम नीम का तेल

100 ग्राम रतन जोत का तेल

100 ग्राम नील गिरि (सफेदा) का तेल

10 ग्राम कपूर

पहले 500 ग्राम गो मूत्र अर्क में पाईन तेल अच्छी तरह मिलादें फिर बाकी तेल धीरे-धीरे मिला दें बाद में कपूर मिला दें।

उपयोग- इसको ओडो मास की तरह शरीर में लगाया जा सकता हैं या Allout में भरकर उपयोग किया जा सकता है। मच्छर परेशान नहीं करेंगे, स्वास्थ्य के लिए लाभकारी रहेगा।

3. फिनाइल -

1 लीटर गो मूत्र अर्क

100 ग्राम पाईन तेल

2 लीटर नीम के पत्तों का उबाला पानी

विधि- पहले 1 लीटर गोमूत्र अर्क में पाईन तेल मिलाते जाये हिलाते जाये वह गाढ़ा सफेद तरल द्रव बन जायेगा। फिर उसमें धीरे-धीरे नीम का पानी मिलाते जाये, हिलाते जाय जब वह एक रस हो जाय तब ½-½ लीटर की बोतलों में भरकर बन्द कर दें। बहुत अच्छा फिनाइल बन गया।

4. **गोमूत्र हरड़े चूर्ण -**

लोहे के बर्तन में ½ किलो छोटी हरड़ को गोमूत्र में भिगो दें हर दिन गो-मूत्र बदलते रहे, सात दिन करें, फिर निकाल कर छाया में हल्का सुखाकर तीन दिन छाछ में भिगोदें फिर निकालकर छाया में सुखाकर 50 ग्राम अरण्डी के तेल में भून ले वह फूल जायेगी । 40 ग्राम अच्छे हींग को 60 ग्राम देशी घी में पकालें, फिर अजवायन एक किलो, काली मिर्च चूर्ण 125 ग्राम, जवाखार 30 ग्राम, काला नमक 200 ग्राम, सेंधा नमक 300 ग्राम इन सबकों बारीक पीसकर आटे वाली छलनी से छान ले फिर इसे खरल में खूब बारीक कर लें । जितना बारीक होगा उतना ही लाभकारी होगा ।

प्रयोग- भोजन के बाद दोनों समय दो-दो चम्मच पानी से लें, पेट सम्बन्धी सभी विकारों में लाभ होगा । गैस, आंव, कब्ज, वात रोग, अपच, भूख न लगना, अनिद्रा रोग में लाभ होगा ।

5. **गौतक्रासव -**

आवश्यक सामग्री :- गाय की छाछ या मठ्ठा 2 लीटर, सेंधा पिसा नमक 100 ग्राम, राई का चूर्ण 100 ग्राम, हल्दी चूर्ण 100 ग्राम ।

निर्माण विधि - गाय के मठ्ठे में समान मात्रा में पानी मिलाकर शेष तीनों चीजे मिलाकर मिट्टी या कांच के बर्तन में भरकर मुँह बन्द करके रख दें । चौथे दिन निथारकर छानकर बोतलों में भर लें, बोतलों में हल्दी जम जाने पर भी निथारते रहें ।

गुण धर्म- बवासीर, उदर रोग, अरुचि, पाचन क्रिया में गड़बड़ी, गैस, अफारा, अजीर्ण रोग दूर होते हैं । यह पाचक होता है । यकृत प्लीहा को लाभ पहुँचाता है ।

प्रयोग विधि- चार छोटे चम्मच पानी में मिलाकर दोनों समय भोजन के बाद लेने से लाभ होता है । इसे हर मौसम में लिया जा सकता है । यह स्वास्थ्य रक्षक, आयुवर्धक स्वादिष्ठ, गैस नाशक सरल योग है ।

6. **कामधेनु गोघृत बाम -**

100 ग्राम बिलौने का गोघृत
50 ग्राम अजवायन के फूल
30 ग्राम खाने का कपूर
20 ग्राम पीपर मेंट
10 ग्राम तुलसी तेल
10 ग्राम नीलगिरि तेल
2 ग्राम लोंग का तेल

क्रमशः मिलाकर 24 घंटे रख दें फिर शीशी में भरें।



10

॥ॐ॥

"ईश्वरः स गवां मध्ये"

शून्य बजट की प्राकृतिक खेती

अमृत मिट्टी एवं अमृत जल-उसकी उपयोगिताः-

मिट्टी पेड़ पौधों की माँ है । स्वस्थ माँ की कोख में ही स्वस्थ बच्चे का विकास होता है । यदि मिट्टी उपजाऊ होगी तो पेड़-पौधों का विकास भी बिना किसी परेशानी के निरंतर होता रहेगा । मिट्टी में यदि सभी प्रकार के पोषक तत्व उचित मात्रा में होंगे, तो पेड़-पौधों को बीमारियाँ लगने की गुंजाइश कम होगी । उचित समय पर सभी पेड़-पौधों में भरपूर फूल और फल आयेंगे । इस तरह उपजाऊ मिट्टी पेड़-पौधों और किसानों को ही नहीं पूरे पर्यावरण को मालामाल बनाती है ।

प्रकृति द्वारा उपजाऊ मिट्टी बनाने में सैकड़ों साल लगते हैं । इससे ज्यादा उपजाऊ मिट्टी प्राकृतिक घने जंगलों में होती है । जंगल में पेड़-पौधों के सूखे पत्ते, डालियाँ, तना और हिस्से जमीन पर गिरते रहते है । इन पर पशु-पक्षी मल-मूत्र करते रहते हैं । मल-मूत्र और मिट्टी में पैदा होने वाले सैकड़ों तरह के आँखों से न दिखाई देने वाले सूक्ष्म जीव, पेड़-पौधों के हिस्से को सड़ाकर उपजाऊ मिट्टी तैयार करते है । जंगलों में यह प्रक्रिया हमेशा धीमी गति से चलती रहती है । इसलिए वहाँ उपजाऊ मिट्टी की एक इंच मोटी परत तैयार होने में सैकड़ों वर्ष लगते हैं ।

आसपास मौजूद पेड़-पौधों, मिट्टी, घास, खरपतवार, गोबर, गोमूत्र और बहुत कम बीजों का उपयोग करके मात्र 100 दिनों में प्राकृतिक तरीके से ऐसी उपजाऊ मिट्टी तैयार की जा सकती है, जिसमें सभी तरह के पेड़-पौधे ताजगी और हरियाली के साथ अगले सैकड़ों सालों तक फलेंगे-फूलेंगे । सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह की मिट्टी तैयार करने के लिए बाजार से कोई सामान नहीं लाना पड़ता, यानी जेब से एक पाई भी खर्च नहीं करनी पड़ती । मिट्टी तैयार करने

के लिए सोच विचार कर योजना बनाकर काम किए जाएँ, तो कुछ ही घण्टों की मेहनत लगती है ।

1. अमृत मिट्टी बनाने हेतु उपयोगी कच्चा माल : गेहूँ, चावल, ज्वार, मक्का, सोयाबीन और दूसरे सभी अनाजों और सब्जियों की फसलों से अनाज और सब्जियाँ निकालने के बाद बचने वाला सूखा कचरा, गन्ने की खोई, केले के पेड़ के पत्ते और तने, सूखे पत्तें और सूखी घास और खरपतवार । इनमें से किसी एक का भी उपयोग कर उपजाऊ मिट्टी बनाई जा सकती है । इनमें से जितनी ज्यादा चीजें मिलाकर मिट्टी बनाई जाएगी, वह उतनी ही अच्छी बनेंगी, क्योंकि अलग-अलग फसलों के अंगों में अलग-अलग तरह के पोषक तत्व होते हैं ।

* गोबर या पशु मल (मांसाहारियों को छोड़कर) ।
* गोमूत्र या पशु मूत्र (मांसाहारियों को छोड़कर) ।
* गुड़ या पके केले, गन्ने का रस या पका कटहल ।
* अलग-अलग तरह के बीज जैसे- गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार, मूंग, तुअर, बरबटी, लौकी, सोयाबीन, कपास, बाजरा, चना, उड़द, मूंगफली, तिल, सरसों, ककड़ी, जीरा, मिर्ची, ग्वारफली, गिलकी, कद्दू, भिंडी, अंबाड़ी, तुलसी, गेंदा, महुआ, सुबबूल आदि । इसमें से या इनके अलावा जो भी बीज उपलब्ध है उनका प्रयोग किया जा सकता है ।
* नदी किनारे की बारीक मिट्टी या जमीन पर से झाड़कर या छानकर जमा की गई मिट्टी ।
* मिट्टी को भार के रूप में तौलकर आयतन के रूप में तौला जाता है । साफ-साफ कहें तो मिट्टी को किलों में नहीं लीटर में तौलते है ।

400 लीटर मिट्टी तैयार करने के लिए लगने वाला सामान इस प्रकार है :

* फसलों का सूखा कचरा या सूखी घास पत्तें 55 किलो ।
* बारीक मिट्टी- 18 तसले (80 लीटर) ।
* अलग-अलग तरह के बीज- 300 ग्राम ।
* ताजा गोबर एक किलो ।
* गोमूत्र या पशु मूत्र (मानव मूत्र भी ले सकते हैं) - 1 लीटर ।

* काला गुड़ - 50 ग्राम या गन्ने का रस - 2 गिलास ।
* पानी - 110 लीटर ।
* बारीक रेत - 2 तसले (20 लीटर)

2.अमृत जल तैयार करने की विधि : एक लीटर ताजे गोबर को 10 लीटर पानी में अच्छी तरह हाथ से चूर-चूर कर मिलाते है । इसके बाद इसमें एक लीटर गोमूत्र मिलाते है । अंत में 50 ग्राम गुड़ को हाथ से चूर-चूरकर इस घोल में मिलाते है। इस काम को करते समय मन में चिंतन करना चाहिए कि मैं/हम प्रकृति को स्वस्थ और मालामाल बनाने के लिए अनगिनत सूक्ष्म जीव पैदा करने और उन्हें जीवित रखने के लिए यज्ञ कर रहे हैं । इस घोल को डंडे से सीधा उल्टा घुमाकर अच्छी तरह से मिलाते हैं । हर दस घंटे बाद इस घोल को डंडे से 12 बार इसकी उल्टी दिशा में घुमाते है । 72 घंटे यानी तीन दिन बाद इस घोल में सैकड़ों तरह के अनगिलत सूक्ष्म जीव पैदा हो जाते हैं । इस घोल को तैयार करने के लिए तीसरे दिन इसमें सूक्ष्मजीवों की संख्या सबसे ज्यादा होती है । इसलिए इसका इस्तेमाल तीसरे दिन करते हैं । अमृत मिट्टी तैयार करने के लिये तीन दिन में बनकर तैयार हुए इस 11 लीटर घोल को 100 लीटर पानी से भरी टंकी में डालते है । अब यह घोल कुल मिलाकर 111 लीटर हो जाता है ।

प्रकृति की तरह उपजाऊ मिट्टी तैयार करने की प्रक्रिया को यह घोल लाखों गुना तेज कर देता है । सूरज, चांद के रहने तक उजाऊ बनी रहने वाली मिट्टी तैयार करने वाले इस घोल को अमृत जल कहते है । इस घोल की मदद से जो मिट्टी तैयार होती है वह अनगिनत सालों तक पेड़-पौधों को अमृत के समान पोषक तत्व देती रहता है । इस उपजाऊ मिट्टी को अमृत मिट्टी कहते हैं ।

3.अमृत मिट्टी तैयार करने की विधि : चोपिंग : फरसे या वांके से 55 किलो सूखे कचरे या घास के तीन-चार इंच लंबे टुकड़े करते हैं । इन टुकड़ों के ढेर को 111 लीटर अमृत जल से भरी टंकी में दबा-दबाकर डुबाते है । यह ढ़ेर अमृत जल में पूरी तरह डूबा रहे इसके लिए इस पर लकड़ी के वजनदार लट्ठे या भारी पत्थर रख देते है । ढ़ेर को इसी तरह अमृत जल में 24 घंटे डूबाकर रखते है । इस दौरान सभी सूखें टुकड़ों में अमृत जल अच्छी तरह से भर जाता है । यह अमृत जल सूखें टुकड़ों को तेजी से खाद में बदलना शुरू कर देता है ।

* **हिप बनाना :** अमृत जल में एक दिन डूबोने के बाद निकाले गए टुकड़ों को थोड़ा-थोड़ा कर जमीन पर डालकर तीन फीट चौड़ी पतली से पतली सतह बनाते हैं। चौड़ाई तीन फीट रखने से मिट्टी तैयार करने में मेहनत कम लगती है। साथ ही दोनों ओर से हवा लगने से मिट्टी अच्छी तैयार होती है। लंबाई सुविधानुसार रखें, इस सतह को बनाने में जितना कचरा लगा उससे चार गुनी कम बारीक मिट्टी हाथ से इस पर छिड़क देते है। टंकी में से थोड़ा अमृत जल लेकर इस पर छिड़क देते है। ऐसा करने से मिट्टी और अमृत जल में रहने वाले सूक्ष्मजीव कचरे या घास के टुकड़ों को और तेजी से अमृत मिट्टी में बदलना शुरू कर देते हैं। अमृत जल में डुबोए कचरे की एक पर एक परत बनाने, उसमें उपर्युक्त अनुपात में मिट्टी और अमृत जल डालने की इस प्रक्रिया को लगातार इसी क्रम में करके सभी परतों की कुल ऊँचाई एक फीट तक बढ़ाते है। सभी पौधों की पोषक जड़ें मिट्टी में नौ इंच तक ही जाती है। अमृत मिट्टी के तैयार किए जा रहे ढ़ेर पर लगाए जाने वाले सभी पौधों की जड़ें अच्छी तरह फैलकर बढ़ सके इसलिए ढ़ेर को कूद-कूदकर इसे दबा-दबाकर इसकी ऊँचाई नापी जाती है। 7-7 परतों के बाद 5 मुट्ठी रेत डालनें से मिट्टी व खनिजों की संख्या बढ़ती है।

बार-बार दबाने पर जब ढ़ेर की ऊँचाई एक फीट हो जाती है तब इस पर बारीक उपजाऊ मिट्टी या गोबर की खाद की दो इंच मोटी सतह बनाई जाती है। इस सतह पर एक इंच गहराई में अलग-अलग अनाज, दालों, सब्जियों, पेड़-पौधों के कुल मिलाकर 300 ग्राम बीज लगाए जाते हैं। बीजों को 3-5 घंटे पानी में फुलोकर लगाने से उनमें अंकुर जल्दी आते है।

* **मलचिंग :** ढ़ेर की ऊपरी सतह पर पानी डालने पर बीजों के ऊपर की मिट्टी न बहे इसलिए पहले अमृत जल में डूबोकर इस पर सूखी घास की दो इंच मोटी परत बिछा देते हैं। अब घास की इस परत पर 10 लीटर अमृत जल छिड़क देते हैं। अमृत जल मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों को जल्द से जल्द उस रूप में लाता है जिस रूप में नवजात पौधों की नन्हीं जड़ें उन्हें ले सकती है। तीन चार दिन बाद बीजों से अंकुर निकलने पर इनके ऊपर पड़ी घास हटा देनी चाहिए। ऐसा करने से अंकुर तेजी से बढ़कर पौधें बन जाते हैं। अलग-अलग तरह के अलग-अलग उम्र के हरे पौधों के हिस्सों में अलग-अलग तरह के पोषक तत्व होते है। हरे पौधों में पाए

जाने वाले सभी प्रकार के पोषक तत्व अमृत मिट्टी में मिलान के लिए ढ़ेर पर कई तरह के बीज लगाए जाते हैं।

ढ़ेर पर हर सात दिन बाद 10 लीटर अमृत जल छिड़का जाता है। अमृत जल देना सादे पानी से ज्यादा लाभदायक है। अगले 15 सप्ताह तक इस तरह से अमृत जल दिया जाता है।

बीजों से 21 दिन में तैयार हुऐ पौधों का ऊपर 25 प्रतिशत यानी चौथाई भाग हाथ से तोड़कर बारीक टुकड़े कर पौधों की जड़ों के पास मिट्टी के ऊपर डाल देते है। ये हिस्से सूखकर मिट्टी में मिल जाते हैं और उसके पोषक तत्व बढ़ाते हैं।

बीजों से निकले पौधें 63 दिन के होने पर उनमें फूल आने लगते है। इसे पौधों की प्रौढ़ अवस्था कहते हैं। इस प्रकार के लिए इन सभी को जड़ के ऊपर से काटा जाता है। इन पौधों की जड़ों में लगी मिट्टी में सैकड़ों तरह के सूक्ष्म जीव होते है। इस मिट्टी को कृषि विज्ञान के भाषा में कल्चर कहते है। इस अति उपजाऊ मिट्टी को अमृत मिट्टी में ही रहने दिया जाता है। अब पौधों के सभी अंगों को हाथ से छोटे-छोटे टुकड़े कर इन्हें अमृत मिट्टी के ढ़ेर पर फैला दिया जाता है। चार पाँच दिन में ये सूख जाते है। इसके बाद अमृत मिट्टी के पूरे ढ़ेर को फावड़े से उलट-पलट कर अच्छी तरह से मिला दिया जाता है। इस दौरान सप्ताह में एक बार अमृत जल देते रहने से अमृत मिट्टी में सबसे आखिरी में डाले गए इस प्रकार के टुकड़ों का खाद में बदलना जारी रहता है। इस प्रकार 100 दिनों में तैयार हुई 400 लीटर मिट्टी के 4-4 लीटर के 100 ढ़ेर एक-एक वर्ग फीट में लगाकर इन पर 100 पौधें लगाये जा सकते है। मिट्टी तैयार करने की इस प्रक्रिया को निरन्तर जारी रखकर इन पौधों को बढ़ने के साथ-साथ इनके चारों ओर मिट्टी की मात्रा बढ़ाई जा सकती है। इस प्रक्रिया को लगातार तीन साल तक चलाकर मिट्टी बढ़ाते रहने से अमृत मिट्टी की मोटी परत तैयार हो जाती है। इसके बाद मिट्टी की मात्रा को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं रहती।

4. अमृत मिट्टी की देखभाल के उपाय :

* पौधों के आस-पास मिट्टी में पैदा हुए खरपतवार और घास 21-21 दिन बाद काटकर सुखाकर अमृत मिट्टी पर डालते रहने से इसमें निरंतर पोषक तत्वों (विशेषकर कार्बन) की पूर्ति होती रहती है।

* फसलों से अनाज और पौधों से फल-सब्जियाँ लेने के बाद बचे हरे और सूखे हिस्से इसी मिट्टी के ऊपर डालते रहने से पेड़-पौधों और फसलों का उत्पादन लगातार बढ़ता है ।

* अमृत मिट्टी के ऊपर सूखी घास बिछाकर रखने से वाष्पीकरण (धूप में पानी का भाप बनना) कम होता है और मिट्टी में नमी बनी रहती है । साथ ही पानी कम लगता है और मिट्टी का कटाव और बहाव नहीं होता ।

* तीन-तीन माह में एक वर्ग फीट अमृत मिट्टी पर 25 ग्राम राख डालने से इसकी उर्वरा शक्ति और बढ़ती है ।

सावधानी :

रासायनिक खाद, कीटनाशकों, खरपतवार नाशकों या अन्य प्रकार के बाजारू रासायनिक पदार्थों का अमृत मिट्टी पर छिड़काव करने से इसमें रहने वाले दर्जनों तरह के सूक्ष्म जीव मर जाते हैं ।

अमृत मिट्टी के लाभ :

अमृत मिट्टी को दूसरी मिट्‌टी के तुलना में कम पानी पर भी इसमें लगे पेड़-पौधों में अच्छे फल-फूल आते हैं । इस प्रकार यह पानी की बचत करती है।

* अमृत मिट्टी में सभी प्रकार के पोषक तत्व उचित मात्रा में होने से इसमें महँगी रासायनिक खाद नहीं डालनी पड़ती, जिससे पैसों की बचत होती है ।

* अमृत मिट्टी में लगें पौधों की रोगों से लड़ने की ताकत ज्यादा होती है ।

* अमृत मिट्टी में पेड़-पौधों और फसलों को लगाने के लिए न तो गड्ढे खोदने पड़ते है और न ही हल चलाना पड़ता है । अमृत मिट्टी के ढ़ेर पर पौधों और बीजो को हाथ से मिट्टी हटाकर लगाया जाता है ।

* सभी प्रकार के पेड़-पौधों को लगाने के लिए यह मिट्टी सर्वोत्तम है ।

* अमृत मिट्टी बनाकर मनुष्य प्रकृति के उपजाऊ मिट्टी बनाने के काम को उसी तरीके से करते हुए इसकी गति लाखों गुना बढ़ा देते हैं । पर्यावरण शुद्ध होता है।

* अमृत जल बनाने से सैकड़ों तरह के सूक्ष्म जीवों को जीवन और भोजन मिलता है।
* अमृत मिट्टी में असंख्य सूक्ष्म जीवों (आँखों से न दिखने वाले) और आँखों से दिखाई देने वाले जीवों को जन्म और विकास के लिए वातावरण तैयार होता है।
* अमृत मिट्टी में स्वस्थ पेड़-पौधें, फल-फूल पैदाकर पर्यावरण और सभी जीव-जंतुओं को स्वस्थ बनाने में मदद होती है।
* रसायनों का इस्तेमाल न होने से पर्यावरण की रक्षा होती है।

जैविक कृषि में पंचवटी का महत्व

औषधीय महत्व : पंचवटी के वृक्षों में मंगल विकास उन्मुख गुण जैसे- आंवला में विटामिन सी, बरगद का दूध बलदायी व मिट्टी सूक्ष्म जीवाणुओं युक्त, पीपल-रक्त विकारशोधक, वेल-स्वास्थ्य व अशोक में स्त्री विकारों को दूर करनें के गुण होते है।

पर्यावर्णीय महत्व : बरगद-शीतल छाया-प्रदूषण शोषक, आध्यात्मिक वातावरण, अशोक-सदाबहार, वेल-सुगन्धित व वातावरण की शुद्धि कारक होता है।

धार्मिक महत्व : बेल व बरगद में शंकर जी, पीपल व आंवले में विष्णु जी का निवास माना गया है। अशोक शोकनाशक है।

जैव विभिन्नता संरक्षण : जीव जन्तुओं का भोजन, निवास मानसिक प्रफुल्लता उपलब्ध रहती है।

श्रेष्ठ छाया : पंचवटी में शेष्ट छाया जनित पौधों का मिश्रण है जिसका विशिष्ट गुण है। पंचवटी का वृक्ष समूह कल्याणकारी व बहुपयोगी है।

11

॥ॐ॥

प्रान्त-प्रान्त में स्थानीय प्रजाति (गो) बचाने के लिये गो अभयारण्यों की स्थापना

प्रजाति -

(1) गुजरात- गिर, थरपारकर, कांकरेज, स्थानीय

(2) राजस्थान- थरपारकर, कांकरेज, नागौरी, राठी, स्थानीय

(3) हरियाणा- हरियाणवी, मेवाती

(4) पंजाब- साहीवाल

(5) हिमाचल- पहाड़ी

(6) उतरांचल - पहाड़ी

(7) उत्तरप्रदेश, गंगातीरि, खीरि, स्थानीय

(8) बिहार- बछौर

(9) बंगाल - सिरि

(10) असम - स्थानीय

(11) उड़ीसा - घुमुसारी, बींजारपुरी, मोट्टू, खारीर

(12) आन्ध्र- ओंगोल, पुंगानुर

(13) तमिलनाडु - कांगायम, बरगूर, अम्लाचेरी, पेरमबालुरमोती, जलीकाटु, तोनादैनदु, तेनपांडी

(14) केरल - बैचूर, कासरगोड़

(15) कर्नाटक- हल्लीकर, कृष्णावेलि, अमृतमहल, मल्लांदगीडा, भावारी, अलमाड़ी

(16) महाराष्ट्र- खिलारी, देवनी, गोवोलाव, डांगी, लाल कन्धारी

(17) मध्य भारत- मालवी, निमाड़ी, कैनकथा, गोवोलाव

(18) छत्तीसगढ़ - कौशली

(19) झारखण्ड -

(20) जम्मू कश्मीर -

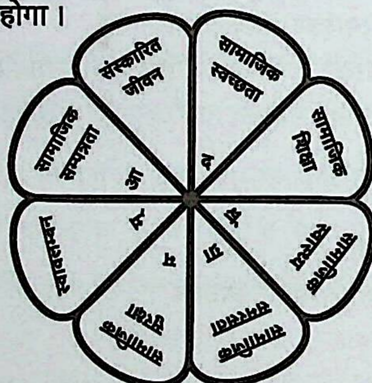
(21) पंश्चिम पंजाब - दाझल, लाल सिंधी

12

॥ॐ॥

ग्राम विकास की हमारी अवधारणा

भारत की संस्कृति ग्रामाधारित संस्कृति है । हमारे यहाँ ग्राम एक परिवार है, वह एक सजीव सक्रिय, स्वावलम्बी, सुखी, सम्पन्न व संस्कारित ईकाई बने इसकी आवश्यकता है । इसके लिये हमको कुछ बिन्दुओं को आधार बनाकर योजना बद्ध तरीके से काम करना होगा ।



1. सामाजिक स्वच्छता - मेरा ग्राम मेरा तीर्थ है वह पवित्र रहना चाहिए स्वच्छ रहना चाहिए, इसलिये उसको स्वच्छ व सुन्दर रखने का दायित्व मेरा व मेरे परिवार का है यह भाव ग्राम के प्रत्येक व्यक्ति में निर्माण हो, गांव की स्वच्छता का दायित्व नगरपालिका, पंचायत का नहीं प्रत्येक ग्रामवासी का है, वह अपना कचरा सड़क पर या गली में नहीं फेंकेगा, घर का गंदा पानी गली में कीचड़ या सड़क में गढ़े नहीं करेगा उसका उपयोग नाली बनाकर पेड़ पौधों को विकसित करने में होगा । घर का कचरा भी पेड़ों के लिये खाद बनेगा, ऐसी सामग्री जो हानिकारक है, मिट्टी में गल नहीं सकती प्रयोग नहीं करूँगा । यह भाव हर ग्रामवासी में निर्माण हो ।

2. सामाजिक शिक्षा- अंग्रेजों के आने से पूर्व हमारी शिक्षा आज से अधिक थी, महिलायें भी शिक्षा में आगे थी यह प्रमाण मिल चुके हैं । हर काम सरकार करेगी यह विचार विदेशी है, सरकार का काम केवल अन्तर्बाह्य सुरक्षा व्यवस्था को संभालना है, अन्य सब काम समाज करेगा अगर सब काम सरकार पर छोड़े तो शासक व कर्मचारी निरंकुश व भ्रष्ट बनेंगे । अतः एक परिवार एक पड़ोसी परिवार को शिक्षित करेगा, इसमें वानप्रस्थी महिला पुरुषों की प्रमुख भूमिका रहेगी । ग्राम में एक भी व्यक्ति अशिक्षित नहीं रहे । यह देखना समाज के प्रमुख लोगों का काम है ।

3. सामाजिक स्वास्थ्य - भारतीय जीवन में चिकित्सा को व्यवसाय नहीं बनाया । प्रकृति ने हमारे चारों ओर अनेक प्रकार की वनस्पति पैदा की है, जो उस क्षेत्र में पैदा होने वाले रोगों का सफल उपचार है । हमारा भोजनालय का मशालादान प्राथमिक उपचार का सफल माध्यम है। उसके द्वारा प्राथमिक स्तर पर ही रोगों का उपचार कर सकते हैं एवं एलोपैथी दवाओं से होने वाली बाद की कठिनाइयों से बच सकते हैं । देशी चिकित्सा सरल, सस्ती व निरापद है, उसके प्रति पुनः विश्वास निर्माण करने की आवश्यकता है ।

4. सामाजिक समरसता - हमारी प्राचीन ग्राम व्यवस्था में छुआछूत, भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं था, यह विदेशी आक्रमण का परिणाम है । हमारे यहाँ गाँव एक परिवार था, गाँव एक स्वावलम्बी ईकाई थी, जिसमें सभी प्रकार की विधाओं के तज्ञ लोग रहते थे । व्यवहार में वस्तु विनमय था । गाँव की प्रत्येक बहिन, बेटी, मेरी बहिन, बेटी है । ग्राम की बारात जब दूसरे गाँव जाती थी तब घर के बुजुर्ग घर के मुखिया को सूचना देते थे की अपने गाँव की इतनी बेटियाँ उस गाँव में है उन्हें निमंत्रण देना मत भूलना । घर का मुखिया उन बहनों के घर जाकर बताकर आता था कि आज तुम्हारे भाई का विवाह है तुम्हें उसमें आना है । फिर उन्हें कपड़े, कुछ धन राशि आदि देकर सम्मानित करते थे । चाहे वह अनुसूचित जाति या अन्य किसी भी परिवार की हो । इस प्रकार भेद भाव के लिये कोई स्थान नहीं था ।

5. सामाजिक सुरक्षा - ग्राम में किसी बहिन बेटी का अपमान न हो, ग्राम में चोरी न हो, बदमाशी न हो, लड़ाई-झगड़ा न हो, मुकदमें बाजी न हो यदि किसी कारण कोई-विवाद हो भी तो वह न्यायालय में न जाय उसका निर्णय शीघ्र वहीं के प्रमुख लोग कर दें । ऐसा एक गाँव बने ।

6. स्वावलम्बन - "1835- 2 फरवरी लन्दन की पार्लियामेन्ट (संसद) में भाषण देते हुए लार्ड मेकाले ने कहा था कि मैंने सारे भारत का लम्बाई-चौड़ाई में भ्रमण किया है पर मुझे एक भी <u>भिखारी</u> नहीं मिला एक भी <u>चोर</u> नहीं मिला ऐसे ऊँचे जीवन मूल्यों वाला यह देश है, हमें इसको बदलना है ।"

फिर से हमारे ग्राम स्वावलम्बी बनें, उसमें कोई भूखा नंगा न रहे यह दायित्व समाज का है, सरकार के मनरेगा जैसे प्रयास विकृति पैदा कर रहे हैं । पहले कोई व्यक्ति भूखा होता था तो भोजन के समय किसी सम्पन्न घर में चला जाता था जहाँ उसका भोजन हो जाता था, देरी होने पर मन्दिर में जाता था वहाँ मन्दिर का पुजारी कहता था, भोजन सामग्री लेलो बनालो खालो, प्रत्येक घर से उस समय सीधे के रूप में कच्ची भोजन सामग्री घरों से आती थी, मुझे याद है जब मैं छोटा था तब माँ एक थाली में सब भोजन सामग्री, (आटा, दाल नमक, मसाले) रखकर कहती थी जाओ मन्दिर में दे आओ । उस समय बाजार में भोजनालय, ढ़ाबे नहीं थे पर कोई भूखा नहीं सोता था, कोई नंगा नहीं रहता था । हमें फिर से उन व्यवस्थाओं को

लागू करना पड़ेगा । साथ ही ग्राम में कोई भी व्यक्ति निकम्मा न रहे वह कोई न कोई सेवा काम करे उसके भरण-पोषण की व्यवस्था समाज करें ।

7. सामजिक सम्पन्नता - ग्राम सम्पन्न बने, इसके लिए ग्राम की विकास समिति बनाकर ग्राम के सर्वांगीण विकास की योजना की जाय । गाँव में अगर पहाड़ है तो उसे फिर हरा भरा बनाने के लिए सम्पूर्ण पहाड़ में नालियाँ (4 फुट लम्बी दो फुट गहरी, दो फुट चौड़ी) खोदी जाय उसकी मिट्टी को नीचे की ओर डाला जाय उसमें एक वृक्ष लगा दिया जाय, वर्षा होने पर नाली पानी से भर जायेगी, पानी बहने से बचेगा उसकी नमी से वृक्ष पनपेगा, ऐसे पूरे पहाड़ में ढ़ाल के विपरीत जिक-जैक रूप में हजारों नालियाँ बनाई जायें। इससे व्यर्थ बहकर जाने वाला जल रूकेगा, उससे गाँव के कुएँ व तालाबों का जल स्तर बढ़ेगा, पर्यावरण की रक्षा होगी। गाँव को शुद्ध जल मिलेगा ।

गाँव में पैदा होने वाली उपज व विभिन्न कुटीर उद्योगों से निर्मित सामग्री को बेचने के लिए **हाट व्यवस्था** निकट के ही 20-25 किलोमीटर की परिधि में होनी चाहिए जहाँ प्रत्येक किसान व कारीगर अपना सामान बेच सके व खरीददार खरीद सके इसमें बिचौलिया न हो, दोनों को ठीक भाव में चीज का क्रय विक्रय हो सके । सामान का लाना ले जाना बैलगाड़ी से हो, थोड़ी दूर में आवागमन का साधन भी घोड़ा गाड़ी या बैलगाड़ी हो । किसान, कारीगर को बाहर से कुछ भी लाना न पड़े, बीज, खाद, दवा, बैल सब सामान स्वयं का हो, बाहर से कुछ भी लाना न पड़े केवल पैसा ग्राम में आयेगा ।

गाँव में पैदा होने वाले, कच्चे सामान को तैयार करके बाजार में बेचा जाय ताकि अच्छा मूल्य मिल सके- यथा आंवला उसकी कंडी, मुरब्बा, आचार, शरबत, त्रिफला चूर्ण गाँव में बनाकर अच्छी पैकिंग कर बाजार में बेचा जाय । सभी प्रकार के कारीगर ग्राम में हो, लुहार, सुथार (खाती), सुनार, कुम्हार, नाई, मोची, छींपा, दर्जी आदि ।

8. सामाजिक संस्कार - समाज की श्रद्धा, प्रेरणा का केन्द्र मन्दिर हो, जिसमें गाँव के सब बन्धु प्रसन्नता से जाते हों । वहाँ नित्य दोनों समय आरती हो, उसमें सुन्दर बगीचा हो, सुन्दर तालाब या कुआ हो जहाँ सब स्नान कर सकें सुन्दर विशाल वट वृक्ष हों जिनके नीचे सैकड़ों लोग बैठ सकें । जहाँ उसके नीचे नित्य कथाओं की व्यवस्था हो, व्यायाम शाला, पाठशाला हो, अनुसंधान केन्द्र हो जिसमें युवकों को नयी-नयी तकनीकि शिक्षा दी जा सकें ।

गाँव के विद्वान लोग वानप्रस्थी बनकर युवकों को सब प्रकार से शिक्षित व संस्कारित बनाने में अपना योगदान दें । सब प्रकार के उत्सव, त्यौहारों का आयोजन हो जिससे नई पीढ़ी प्रेरणा ले सके ।

ग्राम विकास का मुख्य आधार देशी गाय ही होगी । इससे ही हमें शुद्ध जल, अन्न, फल, सब्जी, पर्यावरण, जंगल, शुद्ध वायु, रोग निवारण क्षमता व सात्विक संस्कार प्राप्त होंगे ।

ग्राम को स्वावलम्बन भी इसी से प्राप्त होगा । खेती व निकट के परिवहन के लिये बैल इसी से मिलेंगे ।



13

॥ॐ॥

होम्योपैथी चिकित्सा

1. जो गाय सिर से या सींग से मारती हैं-

   दवा Nux-Vomica-200

   5 बूंद दिन में एक बार 5 दिन दें। आदत छूट जायेगी।

2. जो गाय पैर से लात मारती है-

   दवा Laehesis-1000

   5 बूंद पहले दिन व 15 दिन बाद दूसरी खुराक दें। लाभ होगा।

3. जिस गाय का बछड़ा-बछड़ी मर जाये गाय दूध देना बंद करदें, उसे Ignatia-200 5 बूँद दिन में एक बार 5 दिन दें।

4. जिस गाय के थनों में खून आता हो- उसे Ipeacac-200

   5 बूंद दिन में एक बार 5 दिन दें लाभ होगा ।

5. जिस गाय की गर्भाशय बाहर आता हो उसको नीम के पानी से धो दें फिर फुलाई हुई फिटकड़ी के पानी में कपड़ा भिगोकर लपेट दें। खाने में Sepia-200 की 5 बूंद दिन में एक बार पांच दिन दें।

6. जिस गाय का थन सूज जाये, छूने न दे उसे Belladona-200 दिन में एक बार 5 बूंद पांच दिन दें।

7. जिस गाय को कांच, कांटा, कील, कीड़ा डंक मार दें उसे Ledum Pel-36 (लेडमपाल) की 5 बूंद आधा-आधा घंटे में तीन बार दें।

8. जिस गाय को मुंह पका-खुरपका हो जाय उसके खुर को नीम के उबले पानी से धो दें। फिर पेट्रोल में रुई भिगोकर पैर के घाव पर रख दें कीड़े बाहर निकलेंगे उन्हें दूर फेंकदे फिर हल्दी व गोमूत्र का लेप बनाकर घाव पर लगा दें।

9. मुँह में कांटे हो गये है, मुँह से लार गीरती है । मोटा नमक पीसकर रगड़ दें तुरन्त लाभ होगा एवं Marc-sol (मर्कसील-200) की 5 बूंद पांच दिन मुंह में डालें लाभ होगा । पशु को अलग बांधे।

14

॥ॐ॥

गो चिकित्सा

गायों की चिकित्सा देशी पद्धति से आयुर्वेद या होम्योपैथी दवा से करनी चाहिये, एलोपैथी चिकित्सा महंगी व अधूरी है । इसलिये पुराने समय में जिन वस्तुओं से चिकित्सा होती थी उन वस्तुओं को व उन चिकित्सकों को ढूढ़कर उनके ज्ञान को संग्रह कर सुरक्षित करना चाहिये ।

- पेट में कृमि
- गायों का शरीर बाहर आना
- आफरा
- जेर नहीं गिरने पर
- गर्मी में न आना
- जूं, किलनी, चींचड़
- थनैला रोग
- मुँह पका - खुर पका
- बच्चा होने में कठिनाई
- गर्भ न ठहरना

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार

क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
1.	मुँहपका (छाले खुरपका)	मुँह व पैर में छाले चलने में परेशानी, खुरों में घाव	बोरेक्स 200 मर्कसॉल - 200 केलेन्डुला - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
2.	रतौंधी	दिखने में परेशानी	यूफ्रेशिया 200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
3.	आँखें आना	पानी आना, लाल होना जलना	यूफ्रेशिया 200 बेलाडोना 200 पल्सेटिला 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
4.	पेशाब में खून आना	पेशाब में जलन, गरम व खून आना	फेरमफास 200 हेमामेलिस 200 केन्थेरिस 200 फास्फोरस 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
5.	फूलगोभी की तरह मस्से (Wart)	शरीर पर मस्से होना	थुजा 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार				
क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
6.	अन्य प्रकार के मस्से	शरीर पर मस्से होना बच्चे जनने के बाद	डलकामारा-200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
7.	जड़ निकलना Prolaps and Uterus बच्चेदानी का बाहर निकलना	पेशाब की जगह से जड़ निकलना, ब्यावने पशुओं के बैठ जाने पर होता है	सिपीया 200 पोडोफाइलम 200 रूटा - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
8.	गलघोंटू	गले में सूजन बुखार	यूपेटोरियम पर्फ 200 आयोडिनम 200 कालीबाइक्रोम 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
9.	अफारा	पेट में गैस भरना, पेट फूलना, कब्ज टट्टी कड़ी होना	कांर्बोवेज 200 कोल्चीकम 200 नक्स वोमिका 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
10.	चोट, घाव इन्ज्यूरी सड़ांध	शरीर पर घाव या चोट लगना व पस बन जाना	केलेन्डुला 200 आर्निका 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
11.	डायरिया (दस्त)	पतले पिचकारी के समान दस्त	ऐलोज 200 पोडोफाइलम 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
12.	खूनी दस्त	खून व आँव मिला पतला गोबर	मर्कसाल-200 मर्ककोर-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
13.	सर्दी, खाँसी, जुकाम	नाक से पतला पानी बहना व खाँसना	एलियमसिपा-200 ब्रायोनिया-200 एन्टिमटार्ट-200 आर्स आयोड-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
14.	जलना	आग से जलने पर	केनथेरिस-200 कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार

पशुओं में होने वाले रोग एवं होम्योपैथिक उपचार				
क्र.	रोग	लक्षण	दवाई	मात्रा
15.	पेट दर्द कुम्बड निकालकर चलना	पेट दर्द जानवरों का कराहना	डायसकोरिया विलोसा-200 मेगफास - 200 कोलोसिन्थ - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
16.	मोंच	माँसपेशियें में खिंचाव लंगड़ापन, हड्डी में चोट फ्रैक्चर (हड्डी टूटना)	रसटाक्स-200 आर्निका-200 हायपेरिकम-200 रूटा-200 सिम्फायटम-200 कल्केरिया फास-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
17.	दमा / खाँसी	श्वास का तेज चलना	ब्लेटा ओरिन्यनटेलिस-200 इपिकाक - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
18.	उल्टी	मुँह से बार-बार पानी गिरना	इपिकाक-30	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
19.	गांठे (मंद)-ट्यूमर	शरीर पर गांठ होना	केलकेरिया फ्लोर-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
20.	काँटा, या सुई लगना	शरीर पर सूजन हो जाना	लिडमपाल-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
21.	खुजली होना	चर्म रोग	इचिनेशिया-200 सल्फर-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
22.	मूत्र रोग	बार-बार पेशाब करना	कास्टीकम-200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
23.	ब्याने के बाद (डिलीवरी होने के पश्चात)	बार-बार पेशाब करना	आर्निका - 200	20 गोलियां पानी में 2-3 बार
24.	गोबर में कीड़े (वर्म) कीड़े		सीना - 200	

स्वाभाविक उपलब्ध देशी साधनों से -

(1) **आफरा-** (क) नारियल की रस्सी में छोटी-छोटी गांठे पास-पास लगाकर मुँह के अन्दर डालकर दोनों जबड़ों के बीच बाँध दें, इससे वह बार-बार मुँह चलायेगी और उसकी गैस बाहर आ जायेगी।

(ख) उसे दो तीन ग्राम शुद्ध हींग घोलकर पिला दें। इससे उसकी गैस निकल जायेगी।

(ग) 100 ग्राम तारपीन का तेल, 500 ग्राम तिल के तेल में मिलाकर बांस की नाल से पिला दें इसमें 25 ग्राम काला नमक भी मिला दें। यह भी आफरा दूर करने में सहायक होगा।

(2) **थनैला रोग -** यह रोग गाय के बांधने का स्थान ज्यादा कठोर होने पर हो जाता है। अतः बाँधने की जगह (फर्श) मुलायम रहे।

रोग होने पर थन से दूध आना बन्द हो जाता है, थन में दूध जमकर गादी पत्थर जैसी हो जाती है, इसके लिये शीशम वृक्ष के कोमल पत्तों की चटनी बनाकर थन के ऊपर गादी पर लेप कर दें ऐसा 5-6 दिन करें इससे गादी नरम हो जायेगी, तब नीम के पत्ते उबालकर ठंडाकर उस पानी की थन के अन्दर सिरींज की सूई हटाकर पिचकारी दे दें - बाद में दूध जमीन पर निचोड़ दें- ऐसा करने से थन वापिस ठीक हो जायेगा।

(3) **जेर नहीं गिरने पर -** गाय ब्याने के बाद कई बार, 2-3 घंटे तक जेर नहीं गिरती

(क) इसे निकालने के लिये <u>बांस</u> के पत्ते खिलाने से लाभ होगा है।

(ख) चुहारा-खारक की गुठली <u>आधी</u> फोड़कर गुड़ में लपेट कर खिलादें थोड़ी देर में जेर बाहर आ जायेगी।

(4) **गाय का ताव (हीट) में न आना -** (क) चुहारा 4 (गुठली निकालकर) 8 दिन तक रोज खिलायें गाय हीट में आ जायेगी।

(5) **गाय ताव में आती है पर ठहरती नहीं-** गर्भधारण नहीं करती- तब ½ चम्मच सूंघने वाली तम्बाकु का चूर्ण सिरींज में भरकर (गाय के ताव (हीट) में आने पर) योनी में अन्दर स्प्रे कर दें आद में गर्भाधान करायें गर्भ ठहर जायेगा।

(6) **प्लास्टिक खाई हुई गायों की चिकित्सा** - सरसो का तेल 100 ग्राम, तिल का तेल 100 ग्राम, नीम का तेल 100 ग्राम, अरण्डी का तेल 100 ग्राम, देशी गाय की ताजा छाछ (मट्ठा) 500 ग्राम, 50 ग्राम फिटकड़ी (Alum), 50 ग्राम पिसा हुआ सेंधा नमक, 25 ग्राम पिसी हुई लाल राई (सरसों नहीं) इन सबको घोलकर इतनी सामग्री सुबह सायं तीन दिन तक नित्य पिलानी है और तीन दिन हरा चारा ही खिलाना है, सूखा चारा बिल्कुल नहीं- बाद में सामान्य चारा खिलायें- इससे पेट में हलचल मचेगी, प्लास्टिक अपना स्थान छोड़ेगा, जुगाली में मुँह में आयेगा, गाय उसे बाहर गिरायेगी ऐसा महिने भर तक करेगी इससे 30-40 किलो प्लास्टिक बाहर आयेगा, गाय ठीक हो जायेगी। ऐसी गाय को बाँध कर नहीं रखना चाहिए । दवा देते समय तीन दिन भी लम्बे रस्से से बाँधे ताकि वह घूम सके ।

(7) कच्चा पपीता (पपैया) तीन किलो, सुबह सायं गाय को खिलाये इससे प्लास्टिक गल कर बाहर निकल जायेगा, कुछ दिन करें ।

गोमाता के द्वारा-

रोगमुक्त, कर्जमुक्त, प्रदूषणमुक्त, अपराध मुक्त, कुपोषण मुक्त, अन्नयुक्त, उर्जायुक्त, रोजगार युक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं और इसके द्वारा कुछ ही वर्षों में स्वावलम्बी सुखी, सम्पन्न भारत बन सकता है। इसलिए हर परिस्थिति में देश में गोवंश का पालन, संवर्धन एवं संरक्षण करना प्रत्येक भारतवासी का दायित्व हैं।





बैल चालित ट्रेक्टर

प्राप्ति स्थान :
दिनेश गुप्ता, जयपुर (राज.)
मो. 9829015492





Amit Printers # 9828157872